मार्च-2014 ◆ वर्ष 2 ◆ अंक 10 ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मार्च-२०१४

चल उड़ जा
रे पंछी,
लेके ये संदेश
सत्यार्थप्रकाश
की शिक्षा
फैला दें देश-विदेश

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० २७

मसालों का अम्बार, एम.डी.एच. परिवार।
MDH
मसाले
असली मसाले
सच - सच
Pav Bhaji masala
Sambhar masala
Garam masala
DEGGI MIRCH
Chunky Chat masala
Chana masala
Kitchen King
Peacock Kasoori Methi
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
ESTD. 1919 9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली - 110015 Website : www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - ११००० रु.	$ 1000
आजीवन - १००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय - ४०० रु.	$ 100
वार्षिक - १०० रु.	$ 25
एक प्रति - १० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट **श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास** के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८ IFSC CODE- UBIN 0531014 में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११४
फाल्गुन शुक्ल सप्तमी
विक्रम संवत्
२०७०
दयानन्दाब्द
१९०

March - 2014

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन
३५०० रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

समाचार २३
हलचल २४

०४	वेद सुधा
०७	भानुमती ने कुनबा जोड़ा
०६	नारी है अनुपम उपहार
१०	झूठ के नामकरण
१४	वेदों के सन्दर्भ में धार्मिक परम्परा
१६	महर्षि भारद्वाज
१७	दयानन्दीय अवधारणा
१८	सत्यार्थप्रकाश पहेली-२
२१	जनवरी का नया साल
२६	मठगुलनी का संघर्ष
२८	वैदिक स्वर्ग का मूलाधार
२६	अलसी-प्रकृति का वरदान
३०	कथा सरित

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - २ अंक - १०

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४, ९३१४५३५३७९, ९८२९०९३११०
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

ऋषिका सूर्यासावित्री द्वारा दर्शित षट्क सम्पदा

वृहस्पतिनावसृष्टां विश्वदेवा आधारयन्।
वर्चो गोषु प्रविष्टं यत् तेनेमां सं सृजामसि।।

हर्ष-विषाद की सामाजिक व्यस्तताओं के कारण लेखनी मौन होकर अचल हो गई थी, किन्तु आज उठी, क्योंकि उसने दूरदर्शन के धार्मिक आस्था के मंच से कथावाचक द्वारा गाये गये इस भक्ति गीत को सुन लिया।

मैय्या करा दे मेरो ब्याह बिरज की छोरी से राधिका गोरी से।
उमर तेरी छोटी है नजर तेरी खोटी है, कैसे करा दूँ तेरा ब्याह,
बिरज की छोरी से राधिका गोरी से।।

कथावाचक महोदय ने झूम झूम कर गाते हुए इस गीत पर उपस्थित नर-नारियों को नृत्य के लिए प्रेरित किया, और वह पूरा धार्मिक सभा-मण्डप वासना का दण्डक बन गया। लेखक पर यह मिथ्यारोप लगाया जा सकता है कि बुद्धि तेरी छोटी है- नजर तेरी खोटी है, किन्तु यह आरोप तब निराधार होकर निरस्त हो जाता है जब परिवार, समाज में सर्वत्र दुष्कर्म - दुराचार की अवांछित घटनाओं की भरमार दिखाई देती हैं। यहाँ तक कि विवाह पूर्व सहसम्बन्ध के प्रकरण न्यायालय में पहुँचते हैं, जो ऐसे ही धार्मिक उदाहरणों के आधार पर मान्य कर दिए जाते हैं। {अभिनेत्री खुश्बू केस}

वेद में मन्त्रद्रष्टा ऋषियों की जहाँ एक लम्बी शृंखला है, वहीं कतिपय ऋषिकायें भी अपने समुज्ज्वला रूप में दिखाई देती हैं। उन्हीं में से एक हैं सावित्री सूर्या, जिन्होंने अथर्ववेद काण्ड चौदह के मंत्रों से विवाह एवं दाम्पतिक जीवन द्वारा परिवार-समाज-राष्ट्र में सात्विकता एवं समुन्नति का संदेश दिया है। वैदिक विवाह संस्कार में इनके दृष्टांकित अनेक मन्त्रों से वर-वधू को प्रेरणा प्रदान की गई है।

निदर्शन स्वरूप यहाँ पर छः मंत्रों का एक पुष्प गुच्छ प्रस्तुत है। विशेषता यह है कि अथर्ववेद १४.२.५३-५८ के इन छहों मंत्रों की शब्दावली एक शब्द को छोड़ कर समान है। मंत्र ऊपर उद्धृत कर दिया गया है।

प्रथम मंत्र में जहाँ 'वर्चो' है, वहाँ आगे के पाँच मंत्रों में क्रमशः 'तेजो' 'भगो' 'यशो' 'पयो' एवं 'रसो' शब्द हैं। इन छहों शब्दों में जो सोपान बनता है उसका ध्यान इस प्रकार करते हैं। 'वर्च' से प्रकाश व ज्ञान मिले, 'तेज' से पालन-पोषण रक्षा के साधन मिले, 'भग' से कलुष कालिमा रहित धनैश्वर्य मिले, 'यश' से सात्विक सम्पदा को दुरुपयोग से बचाकर सदुपयोग द्वारा मान-बड़ाई मिले, 'पय' से दुग्धवत् श्वेत पोषण का विस्तार मिले और 'रस' से जीवन की नीरसता हटकर रसमयता का स्वाद, प्रीति एवं आनन्द का स्रोत। 'रसो वै सः (तै. उपनिषद्)' के सार शृंगारस्वरूप परमात्मा का संस्पर्श एवं सान्निध्य मिल जाये। प्रकाश हो उसमें तेज न हो तो उसके टिमटिमाने से क्या लाभ, तेज हो, उससे कुछ भी कमाई हो, किन्तु भग-ऐश्वर्य का सृजन न हो, तो उस तेज का क्या लाभ? धनधान्य हो किन्तु यश न हो तो उस ऐश्वर्य का क्या लाभ? यश हो किन्तु उसमें पय (दुग्ध) की धवलता, प्रवाहकता पोषण व विस्तार न हो तो उस यश का क्या लाभ? पय (दुग्ध) की प्रवाहकता हो, किन्तु उसमें रसमयता, आस्वाद और माधुर्य न हो तो उस पय प्रवाह का क्या लाभ? रस हो किन्तु उसमें आनन्द का स्रोत 'रसो वै स' अर्थात् परमेश प्रभु का संदर्श न हो तो उस रस से क्या लाभ?

आनन्द स्रोत बह रहा, पर तू उदास है।
अचरज है जल में रहके भी मछली को प्यास है।

प्रायः हम योग का प्रयोग जीवात्मा के परमात्मा से जुड़ने के लिए करते हैं, किन्तु योगीराज श्रीकृष्ण ने श्रीमद्भागवद्गीता (२/५०) में 'योगः कर्मसु कौशलम्' अपने कर्मों में कौशल का नाम ही योग कहा है। इसके लिए योगदर्शन हमें 'योगश्चित्तवृत्ति निरोध' कहकर चित्त की वृत्तियों को नियन्त्रित करने का निर्देश देता है। आज साधारण दुकानदार भी इलेक्ट्रॉनिक तुला पर सामान तौलते हैं किन्तु न्याय की तुला अब भी दो पलड़ों की तराजू ही मानी जाती है, जो इधर-उधर झुकने के बजाय केन्द्र बिन्दु पर सन्तुलित होने से ही सही न्यायपूर्ण मानी जाती है। तुला के केन्द्र बिन्दु की भाँति हमारे सम्पूर्ण जीवन का केन्द्र बिन्दु चित्त है और यह हमारा चित्त का प्रसाधनम्-चित्तप्रसादनम् के बिन्दु पर ठहर जाता है अर्थात् प्रस्तुत अवांछित वृत्तियों से निष्प्रभावी हो जाता है, तभी चित्त मंत्र में

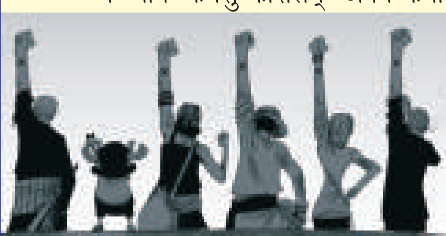

बताये गये रत्नों के प्रवेश से आलोकित होकर मानव जीवन में सफलता और प्रभु प्रेम की रसमय विमलता प्रदान करता है। समय-समय पर आने वाली चतुर्दिशाओं से चित्त में प्रविष्ट होने वाली वृत्तियों को रोकने के लिए योग दर्शन हमें चार प्रकार के कवच प्रदान करता है- वे हैं- 'मैत्री करुणा मुदितोपेक्षाणाम्'

१. मैत्री करें ईर्ष्या नहीं:- सुख, साधन, सद्गुण यश सम्पन्न लोगों को देखकर चित्त में ईर्ष्या का प्रवेश होता है, और वह विचलित हो उठता है, उसे डाह का रूप न देकर वाह-वाह का स्वरूप प्रदान कर, ऐसे लोगों से मैत्री की भावना बनायें तो चित्त का अवसाद हटकर प्रसाद से परिपूर्ण हो उठेगा।

२. करुणा करें घृणा नहीं:- किन्हीं कारणों से किसी के शरीर में कुरूपता, अशक्यता, निन्दा व्याधि भर गयी है, वह सन्तप्त है। वह है तो दुराचारी, समाज में उसकी इसी प्रकार की कुख्याति भी है किन्तु स्वयं को सदाचारी घोषित करते हुए सदाचारियों में घुसता रहता है, ऐसे व्यक्तियों से घृणा न करके करुणा का भाव जगायें और अपने चित्त को निर्मल बनाये रखें।

३. मुदित हों कुपित नहीं:- कोई व्यक्ति पुण्यात्माओं को देखता है, जब उनका सम्मान होता है उनके सम्मान को सहन नहीं कर पाता है, तब उसका चित्त कुपित हो उठता है, द्वेष से भर जाता है। इस द्वेष व कोप को दूर करने के लिए उनके प्रति हर्ष की भावना करनी चाहिए। चाहे दूर के हों या पास के ऐसे व्यक्तियों के प्रशंसक बन जाना चाहिए। इस प्रकार चित्त में प्रसाद होगा अवसाद नहीं। अंग्रेजी का फैन शब्द इसी रूप में प्रयोग किया जाता है।

४. उपेक्षा करें अपेक्षा नहीं:- अपुण्यात्मओं का सामना भी करना पड़ता है। ऊपर से सभ्य दिखाई देने वाले व्यक्ति अन्दर से असभ्य, आपके उत्कर्ष को सहन नहीं कर पाते हैं और वे अपनी बातों से ही आपको अपमानित तथा उदास करना चाहते हैं। उनके असम्बद्ध प्रलाप को- 'नंग बड़े परमेश्वर से' की लोकोक्ति को ध्यान में रखकर अनसुना कर देना उचित है, क्योंकि उनसे आप जितनी भी वार्ता करेंगे, उनका यह प्रलाप बढ़ता ही जायेगा और आपका चित्त खिन्न होता जायेगा। अस्तु! ऐसे व्यक्तियों की उपेक्षा करके ही आप अपने चित्त को शान्त रख सकते हैं।

चारों ओर से प्रहार करने वाली भौतिक कुचेष्टाओं से बचने के लिए यह चार उपाय तो ठीक हैं किन्तु धरती आकाश को मिलाकर छहों दिशाओं से मानव मस्तिष्क में भरने वाले सूक्ष्म षड्यंत्र के निष्कासन हेतु सत्यार्थप्रकाश नवम समुल्लास में महर्षि द्वारा व्यक्त 'षट्कसम्पत्ति' का सहारा वांछनीय है। एक-शम-जिससे अपने आत्मा व अन्तःकरण को अधर्माचरण से हटाकर धर्माचरण में सदा प्रवृत्त रखना। दूसरा- दम-जिससे नेत्रादि इन्द्रियों और शरीर को व्यभिचारादि बुरे कार्यों से हटाकर जितेन्द्रियत्वादि शुभ कर्मों में प्रवृत्त रखना। तीसरा- उपरति-जिससे दुष्टकर्म करने वाले पुरुषों से सदा दूर रहना। चौथा- तितिक्षा- चाहे निन्दा-स्तुति-हानि-लाभ कितना ही क्यों न हो परन्तु हर्ष-शोक को छोड़कर मुक्ति के श्रेष्ठ कर्मों में सदा लगे रहना। मुक्ति ही नहीं सांसारिक सफलता की भी यही युक्ति है। पाँचवा- श्रद्धा- जो वेदादि सत्यशास्त्र और इनके बोध से पूर्ण आप्त विद्वान् सत्योपदेष्टा महाशयों के वचनों पर विश्वास करना। छठा- समाधान -ध्येय के प्रति चित्त की एकाग्रता बनाये रखना। अंग्रेजी कहावत के अनुसार खाली मस्तिष्क पैशाचिक कर्मशाला होता है। इस षट्क सम्पत्ति के अनुसरण से मानव मस्तिष्क का करुक्षेत्र वर्च, तेज, भग, यश, पय और रस षट्क सम्पदा पूर्ण धर्मक्षेत्र के रूप में सक्रिय बना रहता है। आइये, अब छहों दिशाओं की प्रदक्षिणा करके ऋषिका सावित्रीसूर्या द्वारा निर्दिष्ट देवता का सान्निध्य प्राप्त करें। अथर्ववेद के इस सम्पूर्ण काण्ड का देवता पति-पत्नी दोनों से मिलकर बनने वाली एक संज्ञा दम्पत्ति है। सृष्टि के आदि में अमैथुनी प्रजा के सृजन का स्रोत तो स्वयं परमात्मा होता है। उपरांत मैथुनी सन्तति सृजन की आत्मा यही दम्पती होते हैं। दम्पती से ही परिवार का रूप बनता है। व्यक्ति समाज की इकाई हो सकता है किन्तु राष्ट्र की इकाई परिवार होता है। भारतीय उपमहाद्वीप के दर्शन एवं पश्चिम के प्रदर्शन में परिवार के स्वरूप में बड़ा अन्तर है। पश्चिम में जहाँ पति-पत्नी एवं सन्तान परिवार के अंग होते हैं वे भी कुछ समय बाद छिन्न-भिन्न हो जाते हैं। बड़े होकर सन्तान कहीं और, माता का पति कोई और, पिता की पत्नी कोई और, सब और ही और, अपनत्व का कोई ठौर ही नहीं रहता। भारतीय परिवार शृंखला कभी टूटती नहीं। यहाँ माता-पिता-आचार्य-अतिथि, कुलसपूत तथा कुलवधू इन छहों के संयुक्त रहने की परिपाटी सदैव सुदृढ़ रहती है।

भले ही पीढ़ियाँ बदलती रहें, किन्तु पंचायतन पूजा के ये देवता सदैव विराजमान रहते हैं। भारतवासी जब पश्चिम को अपना आदर्श मानकर चलेंगे तो पूर्व का सूरज धूप तो दे सकता है किन्तु शाश्वत संस्कार नहीं। अब तो पश्चिम की धूल पूर्व की धूप को धूसरित करती प्रतीत होती है।

दैनिक हिन्दुस्तान (१.१०.१३) का 'मनसा वाचा कर्मणा' का सन्देश दृष्टव्य है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मनोचिकित्सक जोश बर्टोलोट के अनुसार घर परिवार और सामाजिक-बन्धन दवाओं से उत्तम सिद्ध होते हैं, जो नवजीवन दे जाते हैं। परिवार व्यक्ति को उत्तरदायी, सफल तथा आपदा से लड़ने की शक्ति देते हैं। थामस मूर कहते हैं कि पारिवारिक जीवन उतार-चढ़ाव से भरपूर होता है, सुख-दुःख, सफलता और असफलता आदि इस तरह के चरित्र इसकी यात्रा में जीवन से गुजरते हैं। आत्मा के पोषण के लिए उससे उत्तम कुछ नहीं हो सकता। कैलीफोर्निया में हुए एक शोध के अनुसार जिन लोगों का पारिवारिक या सामाजिक जुड़ाव कम होता है, उनमें हृदय रोग, रक्त संचरण के खतरे बढ़ जाते हैं। पेंसिल्वेनिया के कारनेगी रिसर्च थैलिनयूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने बताया कि जिन लोगों के पारिवारिक बन्धन सुदृढ़ होते हैं वे बीमारियों से दूर रहकर अधिक स्वस्थ रहते हैं। सद्भावनायें प्रायः परिवार की संगति में ही पनपती हैं। परिवार की एकजुटता ने मैडम हेलन केलर को ऐसी दृढ़ता प्रदान की कि

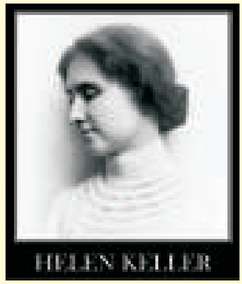

उन्होंने विकलांगता के रहते हुए भी पूरी दुनिया को अपनी सफलता से चकित कर दिया। मनोविज्ञानी लारा किंग कहती हैं कि परिवार के बढ़ते रिश्ते जीवन के सुखद बदलाव हैं जो हर्ष के साथ-साथ हमें उन्नति की ओर अग्रसर करते हैं। परिवार में सदैव एक प्रेरणा छिपी रहती है जो घर के सदस्यों को अच्छे कार्यों के साथ ही सफलता की सीढ़ियों पर चढ़ने के लिए प्रेरित करती है। यही नहीं सफलता की सीढ़ी पर चढ़ने वाला व्यक्ति जानता है कि किसी कारण से वह फिसला तो परिवार उसे थाम लेगा और नवजीवन देकर लक्ष्य तक पहुँचने के लिए नया मार्ग दिखलायेगा। आदि गुरु शंकराचार्य, महर्षि दयानन्द सरस्वती और स्वामी विवेकानन्द ही क्या भारत के अनेकशः महापुरुष विवाह के प्रवाह से भले ही न बहे हों, किन्तु परिवार के प्यार व संस्कार ने ही उन्हें मानवता का सरताज बनाया और उन्होंने अपने विशाल दृष्टिकोण से सम्पूर्ण विश्व मानवता को ही 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का मार्गदर्शन कराया।

प्रस्तुत मंत्रानुसार प्रभु या गुरु से प्राप्त यह वेद-बोध विद्वानों द्वारा बिना किसी भेदभाव के राष्ट्रवर्ती प्रजाजन में निरन्तर प्रसारित करते रहना चाहिए।

- देवनारायण भारद्वाज
वरेण्यम, अवन्तिका प्रथम, रामघाट मार्ग
अलीगढ़ २०२००१ (उत्तरप्रदेश)

इसमें कोई दूसरी राय हो ही नहीं सकती कि देश की जनता भ्रष्टाचार से त्रस्त है। वर्तमान स्थापित तंत्र में इससे लड़ने की, इसे समाप्त करने की इच्छाशक्ति ही नहीं है। अतः भ्रष्टाचार विरोधी किसी भी आन्दोलन का स्वागत होगा ही, यह सुनिश्चित है। और यह हुआ और आश्चर्यजनक तरीके से हुआ। दिल्ली में 'आप' का उदय एक नई आशा लेकर आया। 'आप' की अप्रत्याशित सफलता ने जनमानस का मूड़ जाहिर कर सभी पार्टियों को चेतावनी दे दी। पूर्ण बहुमत दिल्ली में किसी को नहीं मिला। 'आप' नेता केजरीवाल ने स्पष्ट घोषित कर दिया कि वे न भाजपा और न कांग्रेस किसी से समर्थन नहीं लेंगे। नैतिक तौर पर तो यह घोषणा अत्यन्त उचित थी क्योंकि आखिर चुनाव के दौरान 'आप' ने इन दोनों ही दलों पर बेशुमार वार किए थे। इधर भाजपा भी समर्थन के अभाव में सरकार नहीं बना पा रही थी। अतः शीघ्र पुनः चुनाव होना तय लग रहा था। ऐसे में आश्चर्यजनक घटना घटी। कांग्रेस के समर्थन से 'आप' ने सरकार बना ली। ऐसा क्योंकर हुआ इस आलेख में इसकी चर्चा नहीं करेंगे। आप की सरकार बनते ही दिल्ली की जनता की आशाओं का सैलाब उमड़ पड़ा। परन्तु मात्र २०-२५ दिनों में ही केजरीवाल के बदलते बयान, उनकी प्रशासन पर कमजोर पकड़, दिल्ली के बाद लोकसभा में प्रदर्शन दोहराने की जल्दबाजी, 'आप' के मंत्रियों के अहंकारपूर्ण रवैये (जो केजरीवाल के इस कथन 'हाँ मैं हूँ अराजकतावादी' के कारण स्तब्ध लोकतंत्र में परिलक्षित हो रही है) ने जनता की आशाओं पर तुषारापात कर दिया है। इस पर भी बहुत कुछ लिखने को है। पर बीते महीनों में जो सबसे बड़ी चीज नजर आयी वह है 'आप' के नेताओं में गंभीर आर्थिक, सामरिक, देश की अखण्डता से संबंधित विषयों में मतैक्य नहीं है। कई मुद्दों पर तो वे दो विपरीत किनारों पर खड़े नजर आते हैं। किसी एक मुद्दे को लेकर आन्दोलन में परस्पर भिन्न विचारधारा वाले लोगों में सहयोग अस्वाभाविक नहीं होता क्योंकि वे आन्दोलन के मुख्य मुद्दे पर एकमत होते हैं। अन्ना आन्दोलन भ्रष्टाचार के विरुद्ध व जनलोकपाल लाने हेतु था। अतः वहाँ यह चिन्त्य था ही नहीं कि देश के समक्ष अन्य जो गंभीर मुद्दे हैं उनमें आन्दोलनकारियों की राय मिलती थी या नहीं। पर उक्त आन्दोलन से अन्ना का साथ छोड़ 'आप' का जन्म हुआ। 'आप' क्योंकि एक राजनीतिक दल है, अतः यह अत्यावश्यक है कि राष्ट्र की संप्रभुता, संविधान की सर्वोच्चता, लोकतांत्रिक प्रशासनिक पद्धति, आर्थिक व सामरिक नीतियों में इस पार्टी का सुनिश्चित मत हो। परन्तु अल्प समय में ही यह स्पष्ट हो गया है कि 'आप' पार्टी

आत्म निवेदन

भानुमती ने कुनबा जोड़ा

भानुमति के कुनबे जैसी है। सबसे पहले व सबसे गंभीर प्रश्न पर 'आप' के महत्वपूर्ण सदस्य श्री प्रशान्त भूषण का वक्तव्य आया। जितने भी राजनीतिक दल हैं सभी इस बारे में सुनिश्चित मत रखते हैं कि कश्मीर भारत का अविभाज्य अंग है और वहाँ पर 'ला एंड आर्डर' की समस्या से निपटने का अधिकार सरकार को उसी प्रकार है जिस प्रकार कि किसी अन्य राज्य के संदर्भ में। प्रशान्त भूषण ने इस भावना के विपरीत एक टीस पैदा करने वाला बयान दे दिया। देश स्तब्ध रह गया। केजरीवाल ने यह कहकर पल्ला झाड़ लिया कि यह प्रशान्त की अपनी राय है, 'आप' की नहीं। परन्तु केजरीवाल ने यह नहीं बताया कि इस संवेदनशील मुद्दे पर आप पार्टी की क्या राय है? यह भी चिन्ता है कि ऐसे गंभीर मसलों पर भिन्न राय रखने वाले केजरीवाल और प्रशान्त भूषण की ट्यूनिंग कैसे बैठेगी? विपरीत विचारधाराओं वाले घटकों के संगठन निर्णय की घड़ी में सफल नहीं हो सकते।

इसी प्रकार हमने देखा कि एफ.डी.आई. के पूर्व सरकार के निर्णय को 'आप' ने पलटकर दिल्ली में एफ.डी.आई का रास्ता रोक दिया। इस पर 'आप' के एक सदस्य के.गोपीनाथ ने पार्टी के निर्णय की आलोचना कर दी। यह भी सामान्य नहीं नीतिगत संदर्भ था।

वी.आई.पी.कल्चर को समाप्त करने का दावा करने वाली 'आप' के प्रमुख सदस्य कुमार विश्वास की बात करें तो इनके वी.आई.पी. रवैये से तो 'आप' के कार्यकर्ता ही खासे नाराज हैं। इनके अहंकारपूर्ण तरीके ने अशोक चक्रधर जैसे गंभीर साहित्यकार को भी टिप्पणी करने पर मजबूर कर दिया। हाल ही में 'आप' की सदस्या मल्लिका साराभाई ने कुमार विश्वास की आलोचना की है। आप पार्टी का आज सर्वप्रमुख निशाना नरेन्द्र मोदी हैं। परन्तु कुमार विश्वास ने नरेन्द्र मोदी की शान

में पढ़ी कविता में उनकी तुलना भगवान शिव से की है। यहाँ यह कहा जा सकता है कि व्यक्ति के किसी के बारे में विचार बदल सकते हैं। बिल्कुल ठीक है। हम मानते हैं। परन्तु स्तुति और निन्दा के दो अंतिम छोर, व्यक्त करने वाले की विश्लेषण क्षमता पर सवाल तो पैदा करते ही हैं। विश्वास को यह बताना चाहिए कि जब उन्होंने वह कविता पढ़ी थी तब मोदी में ऐसी क्या विशेषताएँ थीं और अब उनमें क्या न्यूनताएँ आ गई हैं जो उनके बारे में विश्वास को अपनी राय पूर्णतः विपरीत कायम करनी पड़ी। या फिर वे स्वीकार करें कि उनकी कविताएँ उनकी निजी भावनाओं की नहीं वरन् बाजारू प्रवृत्ति की परिचायक हैं 'जिसकी शादी उसके गीत' की तर्ज पर आयोजकों की प्रशंसा करना उनका फर्ज बनता है, उन्होंने इसी कार्य को बढ़-चढ़कर किया है। कुमार विश्वास ने कभी मलियाली नर्सों पर अभद्र टिप्पणी की थी। आज 'आप पार्टी' की सदस्य केरल की ख्यातनाम लेखिका सोज ने इसकी तीव्र आलोचना की है। जहाँ केजरीवाल की घोषणा है कि हम प्रार्थी के प्राथमिक सदस्य भी स्क्रीनिंग करके बनाएँगे वहाँ पार्टी की महाराष्ट्र इकाई की नेता अंजली दामनिया, अरुण गवली, दाऊद जैसे कुख्यातों को 'आप पार्टी' में आमन्त्रित करती प्रतीत होती हैं।

शीला दीक्षित पर घोषित समयावधि ७ दिन के अंदर कार्यवाही न करने पर (कामनवैल्थ गेम्स घोटाले के संदर्भ में) 'आप' के ही विधायक बिन्नी ने विरोध के स्वर बुलन्द कर दिए। अब इनमें टीना शर्मा भी शामिल हो गई हैं। यद्यपि केजरीवाल का कहना है कि बिन्नी डॉ. हर्षवर्द्धन की बोली बोल रहे हैं। पारम्परिक राजनीतिक परम्परा के विपरीत दागी नेताओं से किनारा करने वाली पार्टी के प्रमुख अनेक आरोपों में लगातार घिरते जा रहे सोमनाथ भारती की जिस प्रकार रक्षा कर रहे हैं वह एक प्रश्नचिह्न खड़ा कर रहा है। ऐसे अनेक विरोधाभास मात्र एक-डेढ़ माह के समय में ही उभर आए हैं। इस पर भी सरकार चलाने का अभिनव केजरीवाल प्रकार अलग चिन्त्य है।

यहाँ एक तथ्य अवश्य उल्लेखनीय है कि 'आप' के उदय ने पूरे देश भर के राजनीतिज्ञों के व्यवहार में अकल्पनीय परिवर्तन किया है। वी.आई.पी. कल्चर को खत्म करने की दिशा में आप ने जो सराहनीय कदम उठाया है, अनेक राज्यों के मुख्यमंत्रियों के काफिलों की लम्बाई आश्चर्यजनक रूप से कम हो गई। लालबत्तियों के प्रयोग से भी कोताही की जा रही है। ट्रेफिक सिग्नल पर आम आदमी की तरह सरकार भी ठहर कर 'आम' आदमी के मूड का जायजा ले रही है। ये परिवर्तन निरन्तरता को प्राप्त होते हैं तो श्रेयस्कर हैं। इनका श्रेय केजरीवाल को जाता है। इसी प्रकार भ्रष्टाचार के समूल को नष्ट करने की कवायद प्रारम्भ हो तो कहना ही क्या है।

भारीभरकम चुनावी वायदों के बोझ से शहीदाना अंदाज में छुटकारा पाने के अवसर का बेसब्री से इन्तजार कर रहे केजरीवाल ने बिना जनता से राय लिए त्यागपत्र देकर लोकसभा चुनावों के माध्यम से देश का सरताज बनने की आकांक्षा से अपने कदम आगे बढ़ा दिए हैं। परन्तु अब और भी आवश्यक है 'आप पार्टी' सभी महत्वपूर्ण मुद्दों पर अपनी एकमत राय जनता के समक्ष स्पष्ट करे।

'आप पार्टी' के दृष्टिकोण से देखा जाए तो पार्टी के भीतर मुद्दों पर पृथक्-पृथक् राय होना भी एक विशेषता है। इसे भी विचार स्वातन्त्र्य की विशेषता कहेंगे। वस्तुतः किसी भी आन्दोलन में एक हेतु लेकर भिन्न-भिन्न विचारधारा के लोग मिल सकते हैं यह नितान्त स्वाभाविक है। अन्ना आन्दोलन तक यह ठीक था। पर जब केजरीवाल ने अन्ना का साथ छोड़ राजनीतिक पार्टी गठित कर ली तो एक पार्टी के रूप में सदस्यों को व्यवहार करना होगा। भ्रम की गुंजाइश को यथाशीघ्र मिटाने हेतु पार्टी को सभी मुद्दों पर स्पष्ट रूप से अपने दृष्टिकोण को अभिव्यक्त कर देना चाहिए। परन्तु घटनाएँ बताती हैं कि इस संदर्भ में 'आप' अभी भी गम्भीर नहीं है। मुकेश अंबानी के संदर्भ से यह स्पष्ट है। केजरीवाल साहब ने मुकेश अंबानी के खिलाफ FIR दर्ज करायी है। 'आप' के वरिष्ठ नेता योगेन्द्र यादव का कथन है कि अगर अंबानी चन्दा देंगे तो वह स्वीकार्य होगा। तो दूसरी ओर 'आप' प्रवक्ता दिलीप पाण्डे कह रहे हैं कि अंबानी से पैसा कदापि स्वीकार्य नहीं होगा। ऐसी स्थिति में यह चिन्त्य है कि यह पार्टी क्या वास्तव में गम्भीर भूमिका निभाने में सक्षम साबित होगी? 'आप' को यह समझना ही होगा कि वे अब आन्दोलन की नहीं सरकार बनाने की भूमिका में हैं। और ऐसे में इसके सदस्यों का 'भानुमती के कुनबे' के रूप में अधिक समय तक परिलक्षित होना पार्टी के स्वास्थ्य के लिए ठीक नहीं होगा।

अशोक आर्य
०९००१३३९८३६, ०९३१४२३५१०१

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर विशेष

नारी है अनुपम उपहार

हर आँगन की शोभा नारी,
उससे दुनिया सारी है।
कोमल है कमजोर नहीं तू,
शक्ति का नाम ही नारी है।
जग को जीवन देने वाली,
मौत भी तुमसे हारी है।
सतियों के नाम से तुझे जलाया,
मीरा के नाम पे जहर पिलाया।
सीता जैसी अग्नि परीक्षा,
जग में अब तक जारी है।
फिल्म हुनर में दिल दिमाग में,
किसी बात में कम तो नहीं।
पुरुषों वाले सारे ही,
अधिकारों की अधिकारी है।
बहुत हो चुका अब मत सहना,
तुझे इतिहास बदलना है।
नारी को कोई कह ना पाये,
अबला है, बेचारी है।

व्यंग्य झूठ के नामकरण

– अखिलेश बार्चे

'हाँ दादा पायलागी! कैसे हैं. . .? कल जैसे ही दुकान के शुभारंभ का समाचार मिला मन प्रसन्न हो गया। अब आऊँगा तो लडडू ज़रूर खाऊँगा. . .सब आपकी कृपा है. . .जी हाँ जी हाँ. . .।' दूरभाष पर कवि -मित्र की दूर शहर में रहने वाले एक वरिष्ठ कवि से बातचीत हो रही है। कवि मित्र बात करते समय यों झुके हुए थे, मानो चरण स्पर्श करने

के बाद रीढ़ सीधी करने का समय ही नहीं मिल पा रहा हो। वास्तव में वे एक ऐसे सज्जन से बात करने में लगे थे जिनकी पहुँच पुरस्कार/चयन समितियों में अच्छी थी, और जो जुगाड़मेंट के क्षेत्र में माहिर माने जाते थे। कविमित्र को जैसे ही पता लगा कि इन सज्जन के तीसरे बेटे ने एस.टी.डी., पी.सी.ओ., फ़ोटोकापी की दुकान खोली है, उन्होंने तुरंत अवसर का लाभ उठाया और दूरसंचार विभाग के तारों पर सवार होकर उनके पाँव छू लिए।

बात पूरी कर मेरे पास आकर बैठते हुए बोले, 'बुढ्ढ़ा बहुत खुर्राट है, पर क्या करें! साहित्य के क्षेत्र में जमना है तो ऐसे लोगों के पाँव छूने ही पड़ेंगे।' मैंने देखा उनके चेहरे पर चंद मिनटों पहले जला हुआ खुशी का बल्ब फक्क से बुझ गया था और वे कड़कड़ा रहे थे। बाद में बड़ी देर तक तथाकथित 'खुर्राट बुढ्ढ़े' को गालियाँ देते रहे। मैं समझ नहीं पा रहा था कि उनकी वह खुशी वास्तविक थी या यह गुस्सा वास्तविक है। यह तो ज़ाहिर है कि उनके कथन में कुछ न कुछ असत्य अवश्य था।

सच पूछा जाए तो जीवन में हर आदमी कभी न कभी झूठ बोलता है। झूठ की अपनी महत्ता, अपनी उपयोगिता है। सत्य बोलने वाले लोग सतयुग में भी बहुत कम रहे होंगे इसलिए तो राजा हरिश्चंद्र का 'सत्यवादी' होना आज तक याद किया जाता है। धर्मराज युधिष्ठिर का छद्‌म सत्य 'अश्वत्थामा हतः नरो वा कुंजरो वा' पुराण प्रसिद्ध है। और तो और बहुत सारे पौराणिक पात्र तो झूठा (छद्‌म) रूप भी धारण करते थे। गौतम ऋषि नदी पर स्नान के लिए गए तो एक देवता ने तुरंत गौतम ऋषि का डबल रोल लिया व पहुँच गए अहिल्या के समीप। बाकी की कथा आपको मालूम ही है।

झूठ का विकास मानव सभ्यता के विकास के साथ हुआ। जब मानव असभ्य था वह सत्य के नज़दीक था, जब वह सभ्य हो गया, सत्य से दूर हो गया। अत्याधुनिक व्यक्ति अत्यधिक झूठ बोलता है। कहते हैं 'झूठ के पाँव नहीं होते।' शायद इसीलिए वह उड़कर कभी भी, कहीं भी पहुँच जाता है। झूठ की व्यापकता इतनी है कि यह दुनिया के सभी देशों में अपनी जड़ें जमा चुका है। यह भी 'बिन पग चले, सुने बिनु काना' की स्थिति में आ गया है।

एक पुराना लोकगीत है, 'झूठ बोले कौवा काटे, काले कौवे से डरियो' जिस पर एक फ़िल्मी गीत की रचना हुई थी। मुझे आज तक किसी कौवे ने नहीं काटा, इसका मतलब यह हुआ कि या तो यह बात झूठी है या आजकल झूठों की बढ़ती ताकत को देखकर कौवों में काटने की हिम्मत नहीं रही।

भारतीय चिंतन में 'मनसा वाचा कर्मणा' को बहुत महत्व दिया गया है जिसका अर्थ है -'जो मन में है वही कहो और जो कहा है वही करो।' गोकुल की गोपी बिना किसी लाग- लपेट के कहती है 'मन मोहना. . .बड़े झूठे'। आज स्थिति ठीक उल्टी हो गई है। जो मन में है उसे जुबाँ पर बिलकुल मत आने दो, और जो कह दिया वैसा तो बिल्कुल मत करो। जब कोई नेता कहता है 'मैं पार्टी छोड़ने की बात सोच भी नहीं सकता।' तो जनता समझ जाती है कि उसने वर्तमान पार्टी छोड़कर दूसरी पार्टी में घुसने की जोड़-तोड़ शुरू कर दी है। या जब पेट्रोलियम पदार्थों के दाम बढ़ने का खंडन करें तो जनता ताड़ जाती है कि पेट्रोल-डीज़ल महँगा होने वाला है। सुनते हैं पहले आदमी इतना सच्चा होता था कि झूठ पकड़े जाने पर उसका चेहरा फक्क हो जाता था। जब झूठ बढ़ने लगा तो झूठ पकड़ने की मशीन ईजाद की गई। आजकल तो कई लोगों ने इस मशीन पर भी उसी तरह विजय पा ली है जैसे मच्छरों ने डीडीटी पर या मलेरिया परजीवी ने ब्लड टेस्ट पर। एक समय एक विशेष प्रकार के झूठ का नामकरण भी हुआ था 'सफ़ेद झूठ।' इसमें व्यक्ति इतनी होशियारी से झूठ बोलता था कि उसकी शिनाख्त ही नहीं हो पाती थी और सुनने वाला उसे पूरी तरह सच्चा समझ लेता था। 'सफ़ेद झूठ' ने लंबे समय तक संवादों, लेखों, कहानियों में अपना स्थान बना कर रखा।

सभी बदलने के साथ अब इस मामले में

भी प्रगति हुई है। झूठ की, और झूठ बोलने वालों की नई-नई किस्में तैयार होने लगीं हैं। पहले रुपहले पर्दे पर जिस अभिनय के आधार पर 'अभिनय सम्राट' या 'ट्रेजेडी किंग' की उपाधि मिलती थी वह अभिनय अब ढेरों लोग, ख़ासतौर पर, नेतागण करने लगे हैं। मिसाल के तौर पर चुनाव प्रचार के लिए निकला नेता किसी क्षण रुँधे गले से बोलता है, आँखों में आँसू भरकर ज़ार-ज़ार रोने लगता है पर कुछ ही क्षणों बाद खुशी से गद्‌गद्‌ होकर लोगों को बधाइयाँ देने लग जाता है।

एक निष्णात झूठ जो इन दिनों खूब चल रहा है उसमें नामकरण का प्रश्न भी चर्चाओं और गोष्ठियों में उठाया जा रहा है, मसलन किसी न्यूज़ चैनल पर कैमरे

के सामने मौजूद पार्टी प्रवक्ता कहता है, 'हम लोगों में कोई मतभेद नहीं हैं, इस मसले पर सभी लोग एक मत हैं।' सारे दर्शकों को शत प्रतिशत विश्वास होता है कि उसकी बात में ज़रा-सी भी सत्यता नहीं है। पार्टी में जूतम पैज़ार चल रही है। फिर भी प्रवक्ता जी के बोलने में अद्वितीय आत्मविश्वास है। वह बार-बार कहते हैं, 'पार्टी में मतभेदों की बात विरोधियों द्वारा फैलाई गई है, इनमें कोई सच्चाई नहीं है।' अब इस झूठ को आप क्या नाम देंगे? इसके सामने तो सफ़ेद झूठ भी पानी भरता प्रतीत होता है। अगले दिन वही प्रवक्ता बड़ी शान से घोषणा करता है, 'पार्टी में अनुशासन बनाए रखने की ख़ातिर चार लोगों को छः वर्षों के लिए पार्टी से निष्कासित किया जाता है।'

विज्ञापनों की दुनिया ने 'रेशमी झूठ' किंवा 'चमकीले झूठ' को घर-घर में प्रसारित कर दिया है। बुढ़ाते लोग अपने श्वेत केशों को अश्वेत बनाने के लिए विज्ञापनी वस्तुएँ ख़रीदते हैं व खुद को जवान सिद्ध करते हैं। बालों को काला करने के जादू ने स्त्री-पुरुष सभी को सम्मोहित कर रखा है। संधिकाल में जी रही रमणियाँ, जो जवानी को जाने नहीं देना चाहतीं, अपनी त्वचा को रेशमी मुलायम बनाने के प्रसाधनों का भरपूर दोहन कर रही हैं। जन्नत की हक़ीक़त भले ही सबको मालूम हो, दिल को समझाने के लिए थोड़ी-सी लीपापोती में बुरा क्या है? आख़िर चमकीला झूठ चमक ही बढ़ाएगा ना? सच बोलने में अक्सर ख़तरा रहता है। चोर को चोर या भ्रष्ट को भ्रष्ट कहना कतई समझदारी नहीं है इसलिए चतुर सुजान अपनी वाक्पटुता से बात को सत्य असत्य से परे ले जाते हैं, अपने पाँव पर कुल्हाड़ी नहीं मारते। यदि ज़रूरी ही हो तो 'सत्यं ब्रूयात प्रियं ब्रूयात' की सुरक्षित नीति अपनाते हैं। आखिर, 'राजा नंगा है' कहने की नासमझी कोई नादान ही करता है। ऐसी ही नादानी व्यंग्यकार करता रहता है, जहाँ विसंगति देखता है तुरंत बोल पड़ता है, पर इस बारे में कुछ बोलना भी बेकार है क्योंकि यदि वह समझदार ही होता तो व्यंग्यकार क्यों बनता?

(साभार- अभिव्यक्ति)

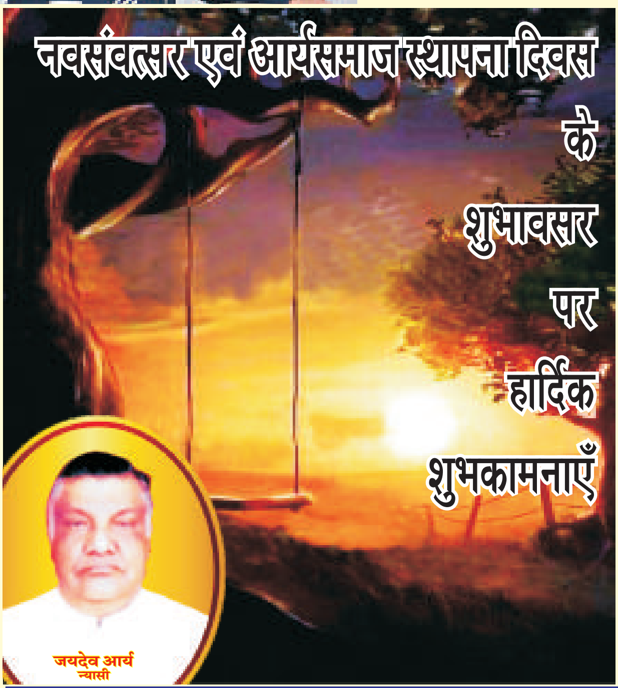

फार्म -IV

समाचार पत्र के स्वामित्व और अन्य विशिष्टियों के बारे में विवरण जो प्रत्येक वर्ष फरवरी के अंतिम दिन के पश्चात् प्रथम अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

१. प्रकाशक का स्थानः- नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१

२. प्रकाशन की नियत अवधिः- मासिक

३. मुद्रक का नामः- अशोक कुमार आर्य राष्ट्रीयताः- भारतीय
पताः- नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१

४. प्रकाशक का नामः- अशोक कुमार आर्य राष्ट्रीयताः- भारतीय
पताः- नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१

५. सम्पादक का नामः- अशोक कुमार आर्य राष्ट्रीयताः- भारतीय
पताः- नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१

६. उन व्यक्तियों के, जो समाचार पत्र के स्वामी हैं और उन भागीदारों या शेयरधारकों के, जो कुल पूँजी के 1 प्रतिशत से अधिक अंश के धारक हैं, नाम और पते।
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल
गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१

मैं अशोक कुमार आर्य घोषणा करता हूँ कि ऊपर दी गई विशिष्टियाँ मेरे सर्वोत्तम ज्ञान और विश्वास के अनुसार सत्य हैं।

तारीखः- ०७.०३.२०१४

प्रकाशक के हस्ताक्षर

प्रत्येक भारतीय ४२० गायों का हत्यारा

- राजेश कुमार आर्य

गौवध निषेध पर संविधान सभा में बड़ी रोचक बहस हुई थी। पूर्वी पंजाब के जनरल पंडित ठाकुरदास भार्गव, सेठ गोविंददास, प्रो. छिब्बनलाल सक्सेना, डा. रघुवीर (सी.पी. बेरार-जनरल) मि. आर.बी. धुलिकर, मि. जैड, एच. लारी (यूनाईटेड प्रोविन्स मुस्लिम सदस्य) तथा असम से मुस्लिम सदस्य रहे सैय्यद मुहम्मद सैदुल्ला सहित कई विद्वान् सदस्यों ने गौमाता के वध निषेध पर अपने विचार रखे थे, और यह अच्छी बात थी कि उस समय संविधान सभा में उपस्थित रहे सदस्यों (मुस्लिम सदस्यों सहित) ने गौवध निषेध के पक्ष में ही अपने विचार व्यक्त किये थे।

इन लोगों के सद्प्रयास और सद्विचारों के चलते भारतीय संविधान की धारा ४८ में प्रावधान किया गया कि राज्य विशेष कर गायों, बछड़ों तथा अन्य दुधारु और वाहक पशुओं की नस्ल के परिरक्षण तथा सुधार के लिए उनके वध पर प्रतिबंध लगाने के लिए कदम उठाएगा। दुर्भाग्य रहा इस देश का कि संविधान का यह अनुच्छेद केवल 'शोपीस' बनकर रह गया। क्योंकि देश का जो पहला प्रधानमंत्री बना था वह स्वयं

मांसाहारी था। इसलिए वह नही चाहता था कि देश में गोहत्या निषेध जैसी स्थिति उत्पन्न हो। यद्यपि १६३८ में अखिल भारतीय कांग्रेस ने पंडित नेहरू के नेतृत्व में ही एक नेशनल प्लानिंग कमेटी बनाई थी जिसकी ३०-३५ छोटी उपसमितियाँ थीं।

१६४६ में इन समितियों ने अपनी अलग-अलग रिपोर्टें दीं। जिनके अवलोकन से स्पष्ट हुआ कि संपूर्ण भारत में गोवध पूरी तरह से बंद होना चाहिए। संविधान सभा और इन समितियों के इस निष्कर्ष के उपरांत भी १६५४ में भारत सरकार के पशुपालन विभाग ने फिर एक समिति बनायी जिसका काम रखा गया कि वह गोवध बंद करने के लिए उपाय सुझाए। लेकिन इस समिति ने अपने 'आका' को प्रसन्न करने के लिए गोवध निषेध पर अपने उपाय न सुझाकर 'गोवध कैसे जारी रखा जा सकता है' इस पर अपने विचार और सुझाव प्रस्तुत किये। समिति ने कहा कि हमारे यहाँ सौ में से चालीस गायों बैलों को खिलाने के लिए पौष्टिक आहार है, बाकी ६० गाय-बैलों को तो हम आहार ही नहीं दे पायेंगे। इसलिए सौ में से ६० कमजोर गाय-बैलों को तो हमें मारना ही पड़ेगा।

इसके पश्चात् १६३८ की पंडित नेहरू की अध्यक्षता वाली कमेटी और उसकी ३०-३५ उपसमितियों की रिपोर्ट तथा संविधान सभा के विद्वान् सदस्यों के राष्ट्रवादी विचारों की उपेक्षा करते हुए इसी १६५४ की समिति की आख्या को भारत में गोवध जारी रखने का कारण घोषित किया गया। आज तक जितनी गऊएँ या बैल काटे जाते हैं उन सबको वृद्ध और अनुपयोगी दिखाया जाता है। इसमें सरकारी डॉक्टर और संबंधित अधिकारियों की सांठ गांठ होती है जो लाइसेंसधारी कातिलों को इन पशुओं को मारने की स्वीकृति प्रदान करते हैं। इस प्रकार बड़ी ही सावधानी से तथा चुपके से राष्ट्र की आत्मा की तथा संविधान के अनुच्छेद ४८ की हत्या कर दी जाती है। जब भी कोई गाय इस देश में कहीं कटती है, या रोजाना कत्लगाहों में जब-जब मारी जाती है तब-तब वह रोती हुई संविधान सभा के लोगों को तथा १६३८ की समिति के सदस्यों को तो शुभाशीष देती है, पर इस देश की आत्मा की हत्या करने वालों को तथा इस हत्या को देखने वालों को धिक्कारती हुई इस संसार से चली जाती है।

प्रत्येक भारतीय ४२० गायों का हत्यारा

कोलम्बस ने जब १४६२ में अमेरिका की खोज की थी तो वह वहाँ ४० गायें और दो सांड लेकर गया, जो कि १६४० तक बढ़कर लगभग साठे सात करोड़ हो गयीं, अर्थात १४६२ की ४० गायों के मुकाबले १८ लाख ७ सौ ७५ गुणा वृद्धि हुई। जबकि भारत में अकबर (१५५६ से १६०५ ई.) के काल में २८ करोड़ गायों के होने का आंकड़ा उपलब्ध है। १४६२ से १६४० तक कुल ५४८ वर्ष हुए जिनमें अमेरिका में ४० से बढ़कर साढ़े सात करोड़ गायें हुईं। अब अकबर के काल को २०११ की जनगणना के समय भी लगभग ४५० वर्ष ही हो गये थे, तो उसके काल की कुल गायों की संख्या अर्थात २८ करोड़ का १८ लाख ७ सौ ७५ गुणा अर्थात् ५ खरब २५ अरब गायों का हो जाना संभावित था। अब सवा अरब का भाग ५ खरब २५ अरब में देने पर ४२० आता है। इसका अभिप्राय हुआ कि भारत के प्रत्येक व्यक्ति के पास आज ४२० गायें होतीं (यदि उनका वध निरंतर न होता रहता तो)। अमेरिका ने बढ़ाया और हमने ४५० वर्षों में घटाया। यदि हम आज ४२० गायों के मालिक नही हैं तो समझो कि हमने ४२० गायों का वध (भ्रूण हत्या) करने का अपराध अपने ऊपर ले लिया है। इतने बड़े अपराध को लेकर ही भारत में प्रत्येक बच्चा जन्मता है।

विश्व के प्रत्येक व्यक्ति को ७५ गायें भारत दे सकता था

अब भारत की कुल ५ खरब २५ अरब गायों की संख्या को भारत की कुल आबादी की भांति ही विश्व की कुल जनसंख्या से

भाग दिया जाए तो भजनफल ७५ आता है, इसका अभिप्राय है कि आज भारत विश्व के प्रत्येक व्यक्ति को ७५ गायें देने की स्थिति में होता।

विश्व की अर्थव्यवस्था तब गाय आधारित होती

यदि ऐसी स्थिति बन जाती तो सारे विश्व की अर्थव्यवस्था तब गाय आधारित होती। सारे विश्व में ही कोल्ड ड्रिंक्स की बड़ी बड़ी कंपनियाँ कहीं न होतीं। दूध दही-लस्सी, मक्खन से पौष्टिक आहार तैयार होता और विश्व में कहीं पर भी कैंसर सहित सैकड़ों प्राणलेवा बीमारियों का कहीं अता पता ही नही होता। भारत में कृषि की स्थिति उन्नत होती, क्योंकि गायों के गोबर से उत्तम खाद खेतों को मिल रही होती। जिस से स्वस्थ फसल और स्वस्थ अन्न हमारे घरों में आ रहा होता। आज की तरह रासानियक खादों से तैयार

हो रही प्राणलेवा हरी सब्जियों की समस्या ही कहीं दिखाई नही देती और ना ही हम दूषित अन्नौषधियों का सेवन करने के लिए अभिशप्त होते। सारे भारत में हरियाली होती और हम अपने यज्ञ विज्ञान के आधार पर अपने राजस्थान जैसे प्रांतों में भी हरितक्रांति करने में सफल हो जाते। साथ ही भारत में अमेरिकी डालर के मुकाबले रुपये के अवमूल्यन का वर्तमान शर्मनाक दौर भी हमें देखने को नही मिलता।

पश्चिमी उत्तर प्रदेश के लिए कई वर्ष पूर्व वैज्ञानिकों ने एक चेतावनी दी थी कि यदि यहाँ रासायनिक खादों का प्रयोग इसी प्रकार जारी रहा तो सन् २०५० तक इस क्षेत्र की ऊर्वराभूमि पूर्णतया अनुर्वर हो जाएगी। वैज्ञानिकों का कहना है कि रासायनिक खादों के अंधाधुंध प्रयोग से कृषि उपज निरंतर गिर रही है और कृषि योग्य भूमि निरंतर अनुपजाऊ (बंजर) होती जा रही है। यदि गोवध जारी रखने की १९५४ ई. की समिति की सिफारिशों को रद्दी की टोकरी में फेंककर उससे पूर्व की (१९३८ ई.) समिति की रिपोर्ट पर ध्यान दिया जाता तो आज यह स्थिति नही आती।

पाप बोध से उबर नही पाए

११ अगस्त सन् २००३ को अटल सरकार ने देश की आत्मा की पुकार को समझते हुए संसद में पूर्ण गोहत्या निषेध हेतु एक बिल पेश किया। तत्कालीन कृषि मंत्री राजनाथ सिंह ने उक्त विधेयक को पेश ही किया था कि गोहत्या जारी रखने के समर्थक दलों ने (कम्युनिस्ट सबसे आगे थे) इस बिल का जोरदार विरोध आरंभ कर दिया। शोरगुल इतना अधिक रहा था कि भाजपा के कई समर्थक दल भी उसी में शामिल हो गये थे और एक अच्छी पहल की भ्रूण हत्या करने के लिए सरकार को विवश होना पड़ा। इस प्रकार आशा की एक किरण जगते-२ रह गयी। पापी अपने पापबोध से उबर नही पाए और उसी में डूबकर मर गये।

पर्यावरण सन्तुलन गाय से ही संभव है

वेद ने एक अद्भुत शब्द 'साहचर्य' की प्रस्तुति की। वास्तव में इस शब्द में ही प्राकृतिक और पर्यावरणीय संतुलन का रहस्य छिपा है। भारत ने आदिकाल से पर्यावरण संतुलन के लिए 'साहचर्य' का प्रयोग किया है। इसलिए भारत ने जीवन को एक प्रतियोगिता या प्रतिस्पर्धा न मानकर साथ-साथ चलने और साथ-साथ रहने का आनन्दोत्सव माना और इसी प्रकार जीने का प्रयास किया। पश्चिमी जगत् ने अपनी मिथ्या धारणाएँ संसार को दीं तथा संसार को नरकगाह या कत्लगाह में परिवर्तित कर दिया। फलस्वरूप सारे संसार में आज उपद्रव, उन्माद, और उग्रवाद का ताण्डव नृत्य हो रहा है।

दिल्ली विश्वविद्यालय के खगोल भौतिकी के रीडर डा. मदनमोहन बजाज और उनके साथी डा. इब्राहीम एवं डा. विजयराज सिंह ने रूस के पुशीना नगर में सितंबर १९९४ में संपन्न हुए अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान सम्मेलन में 'आइंसटीन पेन वेव्स' के सिद्धांत के आधार पर अपने बहुचर्चित शोधपत्र में सिद्ध किया कि धरती माता अपनी संतानों का निर्ममतापूर्वक संहार होते देखकर रोती है, क्रंदन करती है, चीखती है, दहाड़ती है, वही भूकंप बन जाती है।

हमने 'साहचर्य' को तिलांजलि दी तो धरती माता ने हमें दंड देना प्रारंभ कर दिया है। दण्ड की यह प्रक्रिया गति पकड़ती जा रही है। प्रत्येक वर्ष बाढ़ों, भूकम्पों व ऐसी ही प्राकृतिक आपदाओं का क्रम निरंतर बढ़ रहा है। प्रकृति ने 'दण्ड' हाथ में ले लिया है और मानव अपने अस्तित्व के लिए स्थान खोजता फिर रहा है।

अच्छा हो कि अब भी गौमाता की शरण में आ जाएँ, क्योंकि आपत्ति में माँ ही सहायक होती है, और माँ ही काम आती है। माँ अवश्य शरण देगी क्योंकि वह करुणामयी होती है। संविधान के रक्षको! निहित स्वार्थों में संविधान के भक्षक मत बनो, संविधान की मूल भावनाओं को समझो और गौमाता को यथाशीघ्र राष्ट्रीय पशु घोषित करो। समय की यही पुकार है।

वेदों के सन्दर्भ में धार्मिक परम्परा

– रत्तीराम मीणा

आर्य सभ्यता एवं संस्कृति की पावन सरिता वेदों से ही समुद्भूत है। वैदिक काल में भारत को आर्यावर्त्त कहा जाता था जिसका अर्थ है – आर्या=श्रेष्ठ। 'ऋगतौ' धातु से ण्यत् प्रत्यय होकर आर्य शब्द की व्युत्पत्ति होती है। 'आर्याः यत्र वर्तते तदाह आर्यावर्त।' वाल्मीकि रामायण में अनेक बार राम के लिए आर्य का सम्बोधन किया गया है। कालान्तर में सिन्धु नदी के किनारे बसा होने के कारण मुगलकाल में 'हिन्दू' नामकरण हुआ। जिसको काफिर इत्यादि संज्ञा दी गई उसी प्रकार अंग्रेजों की हुकूमत ने इसे INDIA नाम से सम्बोधित किया जिसको ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में पृष्ठ संख्या ७८९ पर इसका अर्थ गुनहगार, लुटेरा, गुण्डा इत्यादि बताया गया है। मनुस्मृति में कहा है –'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्।' हिन्दू जाति वेदों को अपना सर्वस्व मानती है, सनातन कहती है। सार्वकालिक होने के कारण ही वेदों को सनातन कहते हैं। इस संसार में दो तत्वों को ही सनातन माना जाता है – वेद और भगवान्। वेदों का प्रमाण्य आस्तिक ग्रन्थों में तथा वेदों का अप्रामाण्य जैन, बौद्ध तथा तार्किकों ने स्वीकार किया है। जिन विषयों का ज्ञान हमें अपने स्थूल नेत्रों से नहीं होता उनका ज्ञान सहज मिलने के कारण ही मनुस्मृति कहती है–

प्रत्यक्षीणानुमित्या वा यस्तूपायो न बुध्यते।
एनं विदन्ति वेदेन तस्माद्वेदस्य वेदता॥

वेदों का अध्ययन स्वाध्याय का फल पृथ्वी के दान से भी अधिक महत्वशाली है। शतपथ ब्राह्मण (११.५.६.१) में कहा है कि –

यावन्तं ह वै इमां पृथिवीं वित्तेनपूर्णां ददत् लोकं जयति त्रिभिस्तावन्तं जयति, भूयांसं च अक्षय्यं च य एवं विद्वान् अहरह स्वाध्यायमधीते, तस्मात् स्वाध्यायोऽध्येतव्यः।

संस्कृत भाषा के नियमों को आज तक यथावत् रखने वाली 'विश्व की अमूल्य कृति' अष्टाध्यायी है जिसका भाष्य किया महर्षि पतञ्जलि ने, वे कहते हैं कि 'ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्मो षडंगो वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च'। व्याकरण पढ़ने का प्रयोजन भी वेदों की रक्षा ही है – रक्षोहागमलध्वसन्देहा प्रयोजनम्।

धार्मिक एवं सामाजिक परम्परा के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि आज बहुत कुछ परिवर्तन हो चुका है जिसकी कोई कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। कहाँ तो एक ऐसा समय था जिसमें यज्ञीय संस्कृति का सर्वत्र प्रचार-प्रसार था। ब्राह्मण ग्रन्थों का यज्ञपरक व्याख्यान जिसमें लोकाचार, राजधर्म, आधिभौतिक आधिदैविक एवं आध्यात्मिक विषयों की मीमांसा हुआ करती थी। शतपथ ब्राह्मण कहता है कि – 'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म' यज्ञ परक यज् धातु के अर्थ है – देवपूजासंगतिकरणदानेषु। देव शब्द देदीप्यमान तत्वों के विषय में कहा गया यथा – सूर्य, अग्नि, पृथिवी, सोम, जल इत्यादि। ठीक इसी प्रकार 'ब्राह्मण ग्रन्थों में विद्वांसो वै देवाः' कहा गया है। ऋग्वेद के प्रथम मंत्र में यज्ञ का देवता अग्नि को बताया गया है – ओ३म् अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजं होतारं रत्नधातमम्। ठीक इसी प्रकार यजुर्वेद का प्रथम मंत्र सविता (सूर्यदेव) का व्याख्यान करता है– ओ३म् इषे त्वोर्जे त्वा वायवस्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणः ....यजमानस्य पशून् पाहि। किन्तु परिवर्तन की भी हद होती है। श्रुति प्रतिपादित श्रौत यज्ञ और स्मृति प्रतिपादित स्मार्त यज्ञ। जब श्रौत यज्ञों की प्रक्रिया को भी नहीं जाना जाता है उसके स्थान स्मार्त यज्ञों की कोई प्रासंगिकता नहीं होती है, जब चारों वेदों के प्रथम मन्त्रों का यज्ञों में वाचन नहीं होता है तो उस 'यज्ञ' का क्या औचित्य है। जब यज्ञरूप प्रभु का स्थान भव्य मंदिरों, मठों, आश्रमों, सम्प्रदायों, मस्जिदों, गिरिजाघरों, देवालयों, शिवालयों, विविध सत्संग पीठों ने ले लिया तो वैदिक धर्म की दुहाई देना सर्वथा पाखण्ड (अन्धश्रद्धा) है, अपने आपको सवर्था धोखा है, यज्ञ शेष का ग्रहण पाप है। वेदान्त का शंकराचार्य कृत भाष्य (१.३.३८) कहे कि – अथास्य वेदमुपशृण्वतस्त्रपुजतुभ्यां श्रोतप्रतिपूरणं,वेदोच्चारणे, जिह्वाच्छेदः, धारणे शरीरभेद इति स्त्रीशूद्रो नाधीयाताम् इति च' अर्थात् स्त्रियों और शूद्रों को वेदों के सुनने का अधिकार नहीं है तो तथाकथित ब्राह्मणों से यह अपेक्षा की जाती है कि वेदानुकूल श्रौत यज्ञों का संचालन क्यों नहीं हो रहा है? वेदों के आदि मन्त्रों का वाचन क्यों नहीं हो रहा है? ऐतरेय शतपथादि ब्राह्मण ग्रन्थों का अध्ययन-अध्यापन, शोध कार्य इत्यादि क्यों नहीं हो रहा है? यास्ककृत निरुक्त ग्रन्थ का प्रवचन क्यों नहीं हो रहा है? कथावाचकों की योग्यता एवं पंजीकरण अनिवार्य क्यों नहीं होता है? महाभाष्य का प्रवचन एवं वेदों का प्रवचन क्यों नहीं हो रहा है? तथाकथित शास्त्रमर्मज्ञ, कर्मकाण्डी, मठाधीश वेदानुकूल यज्ञों का सम्पादन क्यों नहीं कर पा रहे है? वेदों पर शास्त्रार्थ क्यों नहीं करना चाहते है? शिक्षा मन्त्री क्यों कहते हैं कि 'हनुमान चालीसा' पढ़ कर विवाह संस्कार के यज्ञ में आहुतियाँ दी जा रही हैं? महाभारत में क्यों कहा गया कि "विष्णुयाग" विश्वजित् याग के समान ही है?

युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में "श्रीकृष्ण को जब अर्घ्य का सर्वसम्मत पात्र माना गया तो शिशुपाल द्वारा ईर्ष्यावशात् जो कृष्ण चरित्र को कलंकित किया गया उसे कथावाचक प्रेम और श्रद्धा के साथ 'महाभारत के आदर्श चरित्र की' निंदा करते नहीं थकते हैं? ईश्वर पर किये जाने वाले आक्षेपों के कारण ही इस देश में ईसाई मत का प्रचार-प्रसार हो रहा है जिसकी किसी भी

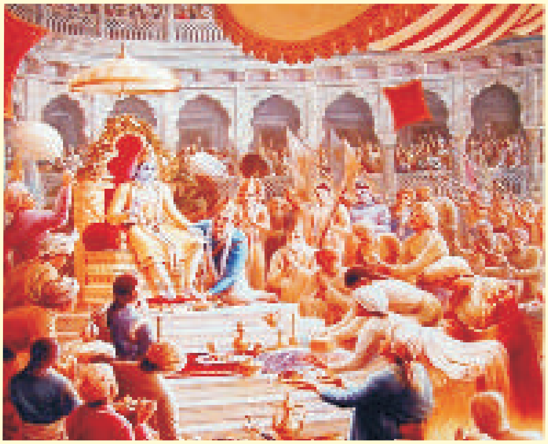

कथावाचक को चिन्ता क्यों नहीं होती है? शुद्ध लाभ वाला व्यापार ही क्यों अपनाया जाता है इन कथावाचकों द्वारा? ज्योतिष्शास्त्र के (सिद्धान्त) गणित को न बताकर फलित के आधार पर लोगों को क्यों भ्रमित कर लूटा जा रहा है?

शैव सम्प्रदाय का मूल आधार यजुर्वेद का ३४वाँ अध्याय को स्वीकार करते हैं जिसके अंतर्गत 'गणेशोत्पति' गणपति की मूर्ति की प्राणप्रतिष्ठा इत्यादि कथानक धार्मिक मान्यता में प्रतिष्ठित कर दिये गये जो सर्वथा वेद विरुद्ध है, जिसका कोई तार्किक प्रमाण भी नहीं दे सकते हैं। ऐसी निर्मूल धारणा से समाज में असन्तोष व्याप्त हो जाता है। जबकि वैदिक मान्यता में 'शिवसंकल्पसूक्त' का भाव सर्वथा भिन्न है जो कि पूर्ण मनोवैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित है। उसका भाव यह है कि मन जागरणावस्था तथा स्वप्नावस्था में बहुत दूर-दूर तक चला जाता है। यह संसार में तीव्र गति से भागने वाला है। यह सर्वश्रेष्ठ ज्योति है, इसके द्वारा ही संसार के समस्त कृत्य किये जाते हैं। इसमें मन के तीन महत्वपूर्ण गुणों का वर्णन है - (१) प्रज्ञान अथवा जानना (Cognition), (२) चेतयत इति चित्तम् की व्याख्या के अनुसार स्मरण शक्ति या याद रखना (Recollection), (३)धृति या धारणाशक्ति (Retention)। यह सारे ज्ञान (Knowledge) और बुद्धि (Intelligence) का खजाना है; आश्रय स्थल है। यह विश्व की समस्त चेतना का आधार है। अतः सुयोग्य सारथी के समान इस मन को अपने नियंत्रण में रखना चाहिए। ये भाव यजर्वेद के ३४वें अध्याय के प्रथम मंत्र 'यज्जाग्रतो दूरमुदैति.....तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु, से मंत्र संख्या ६ तक है।

हमारी सामाजिक एवं धार्मिक परम्परा में आजकल 'श्री गणेशाय नमः' इसके पश्चात् 'हरिः ओ३म् का उच्चारण किया जाता है फिर वेदों का संहिता पाठ किया जाता है। यह परम्परा वैदिक सिद्धान्त के बिल्कुल विपरीत है क्योंकि 'यजुर्वेद प्रातिशाख्य में कहा गया है - ओंकारः स्वाध्यायादौ' इसका अन्य प्रमाण यह है कि - **'ओंकारश्चाथकारश्च द्वावेतौ ब्रह्मणः पुरा, कण्ठं भित्त्वा विनिर्यातौ तेनेमौ मंगलावुभौ' अपि च** पाणिनी का सूत्र **'प्रणवष्टेः'** एवं **ओमभ्यादाने** (८.२.८७) ये सब प्रमाण हैं वेदमंत्रों के प्रारम्भ में ओ३म् इस एकाक्षर प्रणवध्वनि का उच्चारण करना चाहिए। इसके विषय में याज्ञवल्क्य शिक्षा में कहा है - प्रणवं तु प्लुतं कुर्यात्। अतः महाभाष्य में उल्लेख मिलता है - **'ओ३म् अग्निमिळे पुरोहितम्'** उपरोक्त प्रमाणों के आधार पर सिद्ध होता है कि जो 'श्री गणेशाय नमः' 'हरिःओम्' इत्यादि बोले जाते हैं वे सर्वथा त्याज्य हैं एवं इनका कोई सिद्धान्त प्रमाण भी नहीं देता है।

वैदिक मान्यता में अग्न्याधान करने का उल्लेख है जबकि आधुनिक धार्मिक मान्यता में 'पत्थरों में प्राणों की प्रतिष्ठा करने' का पाखण्ड चल पड़ा है। यह सर्वथा वेद विरुद्ध है। वाल्मीकि 'रामायण' एवं 'रामचरित मानस' में कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली' की चरितार्थता होती है। धार्मिक मान्यता में 'रामचरितमानस' को वेदों से भी अधिक मान्यता प्राप्त हो चुकी है इसी कारण तो घर-घर में गोस्वामी तुलसीदास की रामचरितमानस का पाठ किया जाने लगा है। यह एक राजवंश की ऐतिहासिक घटना का अतिश्योक्तिपूर्ण, अविवेकाधारित एवं वैदिक मान्यता के प्रतिकूल वर्णनमात्र है। षोडश संस्कारों को पूर्णतः विधिपूर्वक नहीं करवाया जाता है मात्र कुछ ही संस्कारों से, फलित के तथ्यहीन विचारों से सम्पूर्ण आर्यावर्त्त को कलंकित, परिवर्तित कर 'शुद्धलाभवाली' संस्थाओं का नित्य प्रति निर्माण किया जा रहा है। सत्यार्थप्रकाश की ओर उन्मुख होने का जोखिम कोई नहीं उठाना चाहता है और सहज भाव से स्वीकार कर लिया जाता है 'वेदाःप्रमाणम्' प्रामाण्यवाद की भी कोई सीमा होती होगी आखिर क्यों नहीं उसे परिणित किया जाता है। हिंसा सर्वथा हिंसा ही होती है उसे किसी भी प्रमाण द्वारा अहिंसा सिद्ध नहीं किया जा सकता है लेकिन आज भी हिंसा विषयक कृत्य यथावत् जारी हैं। 'वैदिक हिंसा हिंसा न भवति' यह तर्क देकर हिंसा की जाती रही है जिसके विरुद्ध बौद्ध एवं जैन मतों का प्रचलन हुआ, मानवता को एक नई दृष्टि मिली, फिर भी बाज नहीं आते 'अन्धानुकरण करने वाले'। हमारे राष्ट्र का अंतिम महर्षि जिसे जाना जाता है उसने १९वीं सदी में आर्य समाज की स्थापना कर 'वेदों की ओर लौटो' का आह्वान किया एवं यज्ञ की वेदानुकूल मीमांसा प्रस्तुत कर कहा कि 'यज्ञ भी एक विज्ञान है।' पर्यावरण का सर्वाधिक उपकार यज्ञ द्वारा ही संभव है क्योंकि वैदिक मान्यता में यज्ञ निरन्तर चलायमान होता रहता है। वे तीन स्तर इस प्रकार हैं (१) ब्रह्माण्डीय स्तर, (२) पिण्ड (शरीर) स्तर, (३) भौतिक स्तर। संगतिकरण (यज्ञ) सर्वत्र व्याप्त होता रहता है, जिसके कारण ही सृष्टि चलायमान है, संगतिकरण के अभाव में सूर्य की (हीलियम + हाइड्रोजन) ज्योति भी संभव नहीं है। पिण्ड स्तर पर 'जीवात् जीवोत्पत्ति' नहीं हो सकती है। भौतिक

यज्ञों के अभाव में पर्यावरण की शुद्धि भी कदापि नहीं हो सकती है क्योंकि यज्ञ के लिए कहते हैं कि 'यज्ञो वै देवानात्मा', यज्ञो वै प्रजापति, यज्ञो वै वनस्पति, अग्निषोमात्मकं जगत् इत्यादि सिद्धान्तों की प्रतिष्ठा होती है। सत्यार्थ प्रकाश के पृष्ठ ४५४ पर कुरान के पक्षपाती अल्लाह का पैगाम है कि- ''और अपने हाथों को न रोकें तो उनको पकड़ लो और जहाँ पाओ मार डालो। मुसलमानों को मुसलमान का मारना योग्य नहीं, जो कोई अन्जान से मार डाले, बस एक गर्दन मुसलमान का छोड़ना है और खून बहा उन लोगों की ओर सोई हुई जो उस कौम से होवें। और जो कोई मुसलमान को जान कर मार डाले वह सदैव काल दोज़ख़ में रहेगा। उस पर अल्लाह का क्रोध और लानत है''। मं.१। सि.५। सू.४। आ.६१-६२-६३।।

अपि च ''और शिक्षा प्रकट होने के पीछे जिसने रसूल से

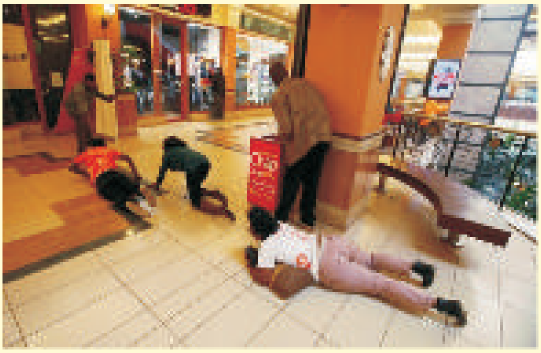

विरोध किया और मुसलमानों से विरुद्ध पक्ष किया, अवश्य हम उनको दोज़ख़ में भेजेंगे'' (मं.१ सि.५ सू.४ आ.११५)

दैनिक भास्कर में छपी २२ सितम्बर २०१३ की घटना में भी स्पष्ट लिखा है कि केन्या में आतंकियों ने फायरिंग से पहले कहा - जो मुस्लिम हैं, वे निकल जाएँ। हम सिर्फ गैर-मुस्लिमों को मारना चाहते हैं।

इसी प्रकार वैदिक धर्म को दूषित करने के लिए स्वार्थी तत्वों ने यज्ञीय कर्मकाण्ड में पशु हिंसा का प्रचलन प्रारम्भ किया, जिसका सायणाचार्य ने यथावत् हिंसापरक भाष्य किया जिसके विषय में महर्षि दयानन्द कहते हैं कि यज्ञीय प्रसंग में हिंसापरक भाष्य सर्वथा त्याज्य हैं क्योंकि धर्म के नाम पर इस देश में बड़े से बड़ा कुकृत्य किया जा सकता है। 'अध्वर' शब्द यज्ञ का पर्यायवाची है जिसका तात्पर्य है 'किसी भी प्रकार की हिंसा से रहित' कर्म। पशु हिंसा का विरोध करने के कारण ही बौद्ध, जैन और चार्वाक मतों का प्रचलन हुआ। इतना सब कुछ होते हुए भी 'अन्धानुकरण' बदस्तूर जारी है। आजकल भी काष्ठ प्रतिमा बनाकर पशु हिंसा का 'कुकृत्य' किया जा रहा है। यहाँ तक कई मंदिरों में तो मांस एवं मदिरा का प्रचलन यथावत् है। महाभाष्य के 'सिद्धे शब्दार्थसम्बन्धः' का वास्तविक परिणाम कब फलीभूत होगा?

राजकीय आचार्य संस्कृत कॉलेज, बीकानेर

भारत के वैज्ञानिक दार्शनिक वैमानिकी विद्या के प्रवर्त्तक महर्षि भारद्वाज

डॉ. भवानी लाल भारतीय

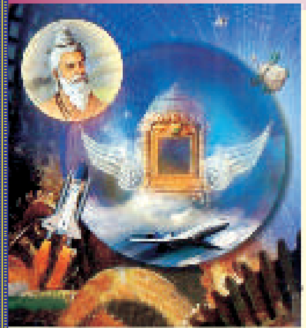

ऋषि दयानन्द ने इस तथ्य का सप्रमाण प्रतिपादन किया था कि पुरातनकाल में भारत में आकाशमार्ग में विमान चलाने का प्रचलन था तथा वायु-मार्ग से गमनागमन होता था। अपने ग्रन्थ 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' के नौविमानादिविद्या विषय शीर्षक प्रकरण में उन्होंने अनेक वेदमंत्रों के प्रमाण देकर यह सिद्ध किया है कि आकाश-मार्ग तथा जल-मार्ग से यात्रा की जा सकती हैं। भारतीय इतिहास में भी ऐसे प्रमाण मिलते हैं जो आकाश-मार्ग से चलने वाले विमानों के अस्तित्व का पता देते हैं। रावण को परास्त करने के पश्चात् श्री राम का (लक्ष्मण, सीता, हनुमान, सुग्रीव, विभीषण आदि सहित) रावण के पुष्पक विमान से अयोध्या लौटना इस तथ्य को प्रमाणित करता है कि उस काल में विमानों के द्वारा आकाश मार्ग की यात्राएँ सामान्यतया होती थीं। पुराणों में सर्वत्र देवताओं द्वारा विमानों का प्रयोग करने के प्रमाण मिलते हैं।

विमानशास्त्र के प्रवर्त्तक महर्षि भारद्वाज माने जाते हैं। महर्षि भारद्वाज आचार्य बृहस्पति के पुत्र थे। उनकी माता का नाम ममता था। भारद्वाज की गिनती सप्तर्षियों में होती है। इनके अतिरिक्त अन्य छः ऋषि हैं- अत्रि, जमदग्नि, वशिष्ठ, गौतम, वामदेव तथा विश्वामित्र। भारद्वाज ऋग्वेद के कतिपय मण्डलों के द्रष्टा भी थे। आपके द्वारा रचित वृहद् विमानशास्त्र का सम्पादित संस्करण स्वामी ब्रह्ममुनि ने तैयार किया था। यन्त्र-सर्वस्व नाम के इनके एक अन्य ग्रन्थ में वैमानिक-विज्ञान तथा आकाश-तत्त्व पर प्रकाश डाला गया है। वेदांगों पर आपके ग्रन्थ हैं- भारद्वाज शिक्षा, भारद्वाज श्रौत तथा गृह्यसूत्र। विज्ञान के जिन सिद्धान्तों के आधार पर विमान बनाये जाते थे तथा आकाश में उन्हें उड़ाया जाता था, इसका विशद् विवेचन उनके ग्रन्थों में पाया जाता है। उन्नीसवीं शताब्दी में एक महाराष्ट्रीय सज्जन शिवबाबू तलपदे ने मुम्बई की चौपाटी पर स्वदेशी तकनीक से बनाये अपने विमान का प्रदर्शन किया था।

३/५-शंकर कॉलोनी, श्रीगंगानगर

राजनीति और धर्म : दयानन्दीय अवधारणा

डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

स्वामी दयानन्द ने अपने ग्रन्थों एवं प्रवचनों आदि में राज्य विषयक चिन्तन-हेतु 'राज-धर्म' शब्द का ही प्रयोग किया है। स्वामी जी ने राज-धर्म को परिभाषित करते हुए लिखा है कि ''चारों वर्ण और चारों आश्रमों के व्यवहार कथन के पश्चात् राज-धर्मों को कहेंगे। (सत्यार्थ प्रकाश)

स्वामी जी के राजनीतिक चिन्तन के आधार वेद, मनुस्मृति, वृहस्पति राज-धर्म-सूत्र, विदुर प्रजागार-नीति तथा महाभारत आदि आर्ष ग्रन्थ रहे हैं। महर्षि राजनीति को वेद-प्रदत्त शास्त्र मानते हैं। यजुर्वेद भाष्य ३०.१ में राज-धर्म को यज्ञ की संज्ञा दी गई है। दयानन्द ने राज-विद्या को श्रेष्ठ योग मानते हुए राजनीति के प्रयोगकर्त्ता को ही समस्त मनुष्यों का माता-पिता-मित्र और रक्षक माना है। उदयपुर के महाराणा सज्जन सिंह को महर्षि ने पत्र लिखकर उन्हें वेदादिशास्त्र, मनुस्मृति के सातवें, आठवें और नवें अध्याय, महाभारत के राज-धर्म, आपद्धर्म और विदुर-प्रजागर-विदुरनीति के अनुकूल कर्त्तव्याकर्त्तव्य को जानकर राज-कार्य करने के निर्देश दिए थे। दयानन्द ने राजकीय कार्यों को 'पोलिटिकल' की संज्ञा प्रदान करते हुए राज-धर्म को राज्य की आत्मा बताया है। स्वामी जी चाहते थे कि राज-कार्य धर्मानुसार ही किया जाना श्रेयस्कर है, क्योकि जो धर्मात्मा पुरुष होते हैं, उनके क्षात्र धर्म और सब राज्य में ईश्वर का प्रकाश होता है। इसीलिए स्वामी जी ने राज-धर्म को ही वास्तविक राजा और राज्याधिकारी कहा है, किसी व्यक्ति विशेष को नहीं।

स्वामी जी के उपर्युक्त कथनों एवं मान्यताओं से स्पष्ट है कि उनकी राजनीति विषयक अवधारणाएँ धर्ममूलक हैं। इसीलिए उन्होंने 'राज' शब्द के साथ 'नीति' न लगा कर 'धर्म' शब्द लगाया है। देश की स्वतन्त्रता-हेतु दयानन्द ने राज-पुरुषों के चारित्रिक उन्नयन एवं नैतिक विकास को अपरिहार्य स्वीकारते हुए ही धर्मनिष्ठ राजनीति की स्वीकृति दी है। उनका अभिमत है कि 'यदि अधर्म से चक्रवर्त्ती राज्य भी प्राप्त होता हो, तो उसको ग्रहण नहीं करना चाहिए।' इस कथ्य से स्पष्ट है कि राजनीति को धर्म (धारण करने के अर्थ में) मानते थे। उन्होंने राजनीति के शुद्धिकरण-हेतु ही देश, काल, परिस्थिति एवं जनभावना के अनुकूल राज-धर्म शब्द का प्रयोग किया है जिससे कि राजनीति से स्वार्थ, छल एवं कपट आदि को समाप्त किया जा सके। वे राजनीति में नैतिक मूल्यों एवं प्रतिमानों की स्थापना करना चाहते थे।

दयानन्द ने अपने वेद-भाष्यों में भी धर्मनिष्ठ राजनीति के सिद्धान्त की स्थापना पदे-पदे की है। स्वामी जी राजनीति को भारतीय संस्कृति के मूलाधारों से संयुक्त करते हुए उसके नैतिक तथा आध्यात्मिक कलेवर को बनाए रखना चाहते थे, क्योंकि उनको यह ज्ञात था कि जब भी राजनीति का धर्म एवं नैतिकता से विच्छेद हुआ है, उसका परिणाम स्वार्थ, कपट, छल-छद्म, हिंसा तथा विश्वयुद्ध आदि से हुआ है।

स्वामी जी ने राज-धर्म हेतु 'साइंस ऑफ गवर्नमेन्ट' इँग्लिश शब्द का प्रयोग करते हुए अप्पादो राय जैसे प्रख्यात् राजनीति चिन्तक ने यह अभिमत प्रस्तुत किया है कि ''उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में, स्वामी जी के चिन्तन में, प्राचीन हिन्दू ग्रन्थों-वेदों, धर्मशास्त्रों और मनु का स्पष्ट प्रभाव देखने को मिलता है।'' स्वामी जी के राज-दर्शन की शुचिता एवं सार्वभौमिकता को देखते हुए ही दीवानचन्द ने उन्हें राज-नीतिक दार्शनिक माना है, राजनीतिज्ञ नहीं। स्वामी जी द्वारा राजनीति में धर्म की बहुलता पर बल दिये जाने के कारण धर्मनिरपेक्षता के नाम पर उनकी निन्दा करने की कोशिश की जाती है, परन्तु ऐसे निन्दक वस्तुतः धर्म का अर्थ ही नहीं समझते। स्वामी जी का धर्म कोरा कर्मकाण्डी सम्प्रदाय न था। वे राज्यधर्म के उपासक थे, जिसकी इकाई स्वराज्य है और जिसका अन्तिम लक्ष्य है- अखण्ड सार्वभौम चक्रवती साम्राज्य की स्थापना करना, जो बल और हिंसा से नहीं, प्रत्युत धर्म से ही सम्भव है।

स्वामी जी के राज-धर्म की संकल्पना मूल्यपरक राजनीति की स्वीकृति है। परन्तु दयानन्द द्वारा प्रतिपादित धर्मानुप्राणित विभिन्न राजनीतिक सिद्धान्तों को उनके सही रूप में समझने

आर्य जगत् के प्रख्यात् विद्वान् डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री ने प्रस्तुत लेख में धर्म की भारतीय मनीषा द्वारा मान्य वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत करते हुए बलपूर्वक स्थापित किया है कि राज्यसत्ता तथा उसके समस्त क्रियाकलापों का आधार धर्म होना चाहिए। आज धर्म का नाम सुनते ही नाक-मुँह सिकोड़ने वाले राजनेताओं व दार्शनिकों को इस लेख पर विचार करना चाहिए। जो मनुष्य का कल्याण कर सके वह राजसत्ता धार्मिक ही हो सकती है। आज की सभी समस्याओं का कारण ही धर्म-विहीन राजनीति है जिसका गुणगान किया जाता है। आएँ धर्म को समझें।

- सम्पादक

के लिए स्वामी जी के 'धर्म' की अवधारणा को समझना अत्यावश्यक है।

भारतीय चिन्तन में धर्म की संकल्पना

धर्म, भारतीय चिन्तन का मूलाधार ही नहीं, अपितु प्रमुख निर्देशक तत्त्व भी है। 'धर्म' शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत भाषा के 'धृ' धातु से हुई है, जिसका अर्थ है- धारणा करना, आलम्बन देना अथवा पालन। इसी भाव को महाभारत में इस प्रकार व्यक्त किया गया है- "धारण करने के कारण धर्म कहलाता है, धर्म प्रजा को धारण करता है, जो धारण-संयुक्त है, वह धर्म है।" तात्पर्य यह कि लोक को धारण करने वाला अथवा जिससे लोक धारण किया जाये, वही धर्म है। संस्कृत भाषा का 'धर्म' शब्द अत्यन्त व्यापक एवं विस्तृत है तथा इसे अंग्रेजी के 'रिलीजन' शब्द का रूपान्तर नहीं स्वीकार किया जा सकता है। 'रिलीजन' कहने से जिस अर्थ का बोध होता है, उसकी अपेक्षा भारत के 'धर्म' शब्द का अर्थ अधिक व्यापक है। रिलीजन तो धर्म का अंग मात्र है। मानव जीवन को अनुशासित करने वाले धार्मिक, नैतिक, सामाजिक, राजनीतिक, न्यायिक और परम्परागत कानून का ही नाम धर्म है। वेद में धर्म के लिए 'ऋतु' शब्द का प्रयोग मिलता है। पहले ऋतु जगत्-सम्बन्धी व्यवस्था के अर्थों में प्रयुक्त होता था, परन्तु ऋतु शब्द अब लुप्त-सा हो गया है और उसके स्थान पर सत्य शब्द प्रतिस्थापित हो गया है। ऋतु का प्रयोग सर्वप्रथम प्रकृति के अर्थ में, पुनः प्राकृतिक अवस्था या निरन्तरता (गतिशीलता) के रूप में और बाद में चलकर नैतिकता के रूप में होने लगा। वस्तुतः 'ऋतु' शब्द उस शक्ति का नाम है, जो मानव को सत्पथ की ओर प्रेरित करती है। उपर्युक्त कथनों के परिप्रेक्ष्य में कहा जा सकता है कि वेदों में 'ऋतु' शब्द का प्रयोग शाश्वत विधि या सृष्टि के नियम के रूप में हुआ है, जो कालान्तर में नैतिक नियम, सत्य और धर्म के लिए भी प्रयुक्त होने लगा। वस्तुतः, ऋतु सृष्टि-प्रक्रिया का प्रज्ञापक है।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि भारतीय चिन्तन में धर्म का अर्थ और प्रयोग विभिन्न प्रकारों, परिवर्तनों एवं विपर्ययों के रूप में होता रहा है। बी.के. सरकार के अनुसार धर्म के पाँच अर्थ हो सकते हैं- धार्मिक विश्वास, नैतिक गुण, कानून, न्याय एवं कर्त्तव्य। कीथ ने धर्म को प्रथा, कानून और सदाचरण के अर्थ में माना है। कौटिल्य ने भी धर्म को तीन अर्थों में लिया है- सामाजिक कर्त्तव्य, सत्य पर आधारित नैतिक कानून और नागरिक कानून। धर्म को कर्त्तव्य-पालन के रूप में व्याख्यायित करने से ही वर्ण-धर्म, आश्रम-धर्म, गुण-धर्म, नैमित्तिक-धर्म तथा सामान्य-धर्म के विभिन्न प्रकार होते हैं। संक्षेप में कहा जा सकता है कि भारतीय चिन्तन में धर्म शब्द का प्रयोग अत्यन्त व्यापक एवं बहु आयामीय अर्थों में हुआ है।

क्रमशः ....

- चाणक्यपुरी, अमेठी- २२७३०५ (उत्तर प्रदेश)

सत्यार्थप्रकाश पहेली-२

रिक्त स्थान भरिये- ईश्वर के विभिन्न नाम याद करिये- पुरस्कार प्राप्त करिये

उ	१	क्र	१	■	अ	२	मा	■	३	ज्ञ
■	ब्र	४	■	५	५ न्द्र	■	प	६	६	त्मा
७	रा	ट्	८	ह	८	ति	■	९	९ ज	स

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. अनन्त पराक्रमयुक्त होने से परमात्मा का यह नाम है।
२. जो सत्य न्याय के करने हारे मनुष्यों का मान्य और पाप तथा पुण्य करने वालो को पाप और पुण्य के फलों का यथावत सत्य-सत्य नियम करता है। इसी से उस परमेश्वर का यह नाम है।
३. जो निर्भ्रान्त ज्ञानयुक्त सब चराचर जगत् के व्यवहार को यथावत जानता है। इससे ईश्वर का यह नाम है।
४. जो सबके उपर विराजमान, सबसे बड़ा, अनन्त बलयुक्त परमात्मा है। इससे परमात्मा का यह नाम है।
५. जो अखिल ऐश्वर्ययुक्त है इससे उस परमात्मा का नाम यह है।
६. जो सब जीव आदि से उत्कृष्ट और जीव, प्रकृति तथा आकाश से भी अतिसूक्ष्म और सब जीवों का अन्तर्यामी आत्मा है। इससे ईश्वर का यह नाम है।
७. जो बहु प्रकार से जगत् को प्रकाशित करे इससे परमेश्वर का यह नाम है।
८. जो बड़ों से भी बड़ा और बड़े आकाशादि ब्रह्माण्डों का स्वामी है। इससे उस परमेश्वर का यह नाम है।
९. जो आप स्वयंप्रकाश और सूर्यादि तेजस्वी लोकों का प्रकाश करने वाला है। इससे ईश्वर का यह नाम है।

सहायक ग्रन्थ- सत्यार्थप्रकाश, पुरस्कार- "अनूठी, अद्भुत पत्रिका सत्यार्थ सौरभ" एक वर्ष तक निःशुल्क, घर बैठे प्राप्त करें।
कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ अप्रैल २०१४

नैतिक मानवीय मूल्य

सत्यनारायण समदानी

११ दिसम्बर, २०१३ को भारत के उच्चतम न्यायालय ने अपने एक ऐतिहासिक निर्णय में भारतीय दण्ड संहिता की धारा ३७७ को बहाल करते हुए समलैंगिक यौन सम्बन्धों को दण्डनीय अपराध घोषित किया और इस प्रकरण में पूर्व में दिये गए दिल्ली उच्च न्यायालय के फैसले को अस्वीकार कर दिया। उच्चतम न्यायालय के इस निर्णय पर देश में एक बहस छिड़ गई और समलैंगिक यौन सम्बन्धों के पक्षधर समूहों, समलैंगिक यौन सम्बन्ध रखने वाले व्यक्तियों, कुछ तथाकथित बुद्धिजीवियों और मानवाधिकार के झण्डाबरवालों ने इस निर्णय को व्यक्ति के निजी अधिकारों और मानवाधिकारों के विपरीत मानते हुए विरोध प्रदर्शन भी किये। यही नहीं देश की सत्तारूढ़ राजनैतिक पार्टी के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, केन्द्र सरकार के कुछ मंत्रियों और दल के सदस्यों ने भी उच्चतम न्यायालय के इस निर्णय पर प्रश्नचिह्न लगाते हुए कानून की इस धारा में संशोधन की माँग की जिस पर केन्द्र सरकार ने पुनर्विचार याचिका प्रस्तुत कर दी।

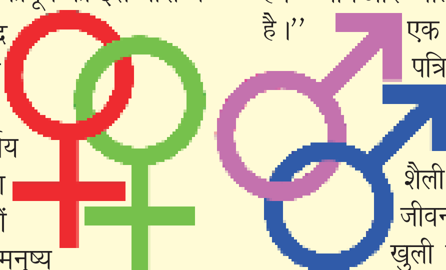

वस्तुतः उच्चतम न्यायालय ने जो निर्णय दिया है वह भारत की सनातन सभ्यता और नैतिक मानवीय मूल्यों के मानदण्डों के अनुरूप है। वह मानव धर्म अर्थात् मनुष्य के कर्त्तव्यों की सनातन परम्परा पर मुहर लगाने का कार्य है। मनुष्य और मनुष्य के बीच आपसी व्यवहार, सामंजस्य और सौहार्द्र स्थापित करने के जो सिद्धान्त ऋषियों ने निश्चित किये थे वे आज भी सर्वमान्य हैं और हजारों वर्षों से उनकी श्रेष्ठता सिद्ध होती रही है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब-जब भी किसी ने धर्म मार्ग से जरा भी हटने का कार्य किया तब-तब अनाचार, अराजकता और अत्याचार की घटनाएँ हुई हैं, और आज भी हो रही हैं। यह मानव धर्म शाश्वत है, सार्वकालिक है और अनादिकाल से चला आ रहा है अतः सनातन है। मनुष्य के जो शाश्वत गुण हैं, वही उसका सनातन धर्म है। इनके बिना मनुष्य मनुष्य नहीं बल्कि पशु समान हो जाता है।

भारतवर्ष एक अध्यात्म आधारित जीवनशैली वाला देश है, जिसमें मनुष्य के लिए धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जैसे पुरुषार्थ चतुष्टय की व्यवस्था की गई है। इसमें काम को भी जीवन का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष माना गया है, परन्तु इसका व्यवहार कुछ नैतिक मर्यादाओं से बँधा हुआ है। समाज को अनुशासित रखने के लिए यौन सम्बन्धों को विवाह जैसे धार्मिक अनुष्ठान से सम्बद्ध किया गया है। भारतीय संस्कृति में स्त्रीपुरुष के बीच मुक्त यौन सम्बन्धों, समलैंगिक यौन सम्बन्धों, विवाहपूर्व एवं विवाहेत्तर यौन सम्बन्धों को पाप और अनैतिकता माना गया है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने भी एक स्थान पर लिखा है कि "मैं स्वतन्त्र प्रेम में विश्वास नहीं करता, भले वह गुप्त हो या खुला। स्वतन्त्र खुले प्रेम को मैंने कुत्ते का प्रेम माना है, और गुप्त प्रेम में कायरता भरी रहती है।"

उच्चतम न्यायालय के इस निर्णय को हम प्रसिद्ध चिन्तक श्री शिवखेड़ा के शब्दों में इस प्रकार व्यक्त कर सकते हैं कि "नैतिक मूल्य और सिद्धान्त सिर्फ अच्छे दिनों के लिये नहीं बने हैं बल्कि बुरे दिनों से भी बचाते हैं। नैतिकता पर आधारित फैसला सही और गलत के बीच चुनावों को दिखाता है। न्यायऔर नैतिकता में सामाजिक हित निहित होता है।" एक और प्रसिद्ध चिन्तक तथा राजस्थान पत्रिका के यशस्वी सम्पादक श्री गुलाब कोठारी ने ठीक ही लिखा है कि "भारत की अध्यात्म आधारित जीवन शैली को विदेशी शिक्षा प्रणाली, धन आधारित जीवन शैली, कैरियर के दबाव, माँ-बाप की खुली छूट व संस्कार विहीनता ने मानवता के सभी मानदण्डों से बाहर निकाल फेंका। बस शरीर मानव का, आचरण में केवल आहार, निद्रा, भय व मैथुन रह गया है। कुछ लोग तो पशुओं से भी नीचे गिरकर जीना चाहते हैं और यह भी चाहते हैं कि समाज इनका सम्मान भी करे। कानून इनको समानता का दर्जा भी दे। भले ही सवा सौ करोड़ में इनकी संख्या २५ लाख ही हो। इनके लिए देश के मूल्य आधारित तथा सैंकड़ों सालों से परीक्षित कानूनों को बदला जाय"।

शास्त्र वास्तव में एक प्रकार के सामाजिक कानून (Social code) हैं, जो समाज को मर्यादित रखने के लिए रचे गये हैं। शास्त्र या धर्म विरुद्ध सभी कर्म पाप कर्म हैं जो समाज को अधःपतन की ओर ले जाते हैं। शास्त्रकारों का स्पष्ट अभिमत है कि जहाँ उच्छृंखलता आई, तृष्णा का उदय हुआ वहीं असंयम आया और जीवन का सन्तुलन बिगड़ा। शास्त्रों में कहा भी गया है- 'धर्मविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभः' अर्थात् जो धर्मविरुद्ध है, वही नरक का द्वार है, और 'परित्यजेदर्थकामौ यौ स्यातां धर्मवर्जितौ'- अर्थात् जो अर्थ

और काम धर्म के विरुद्ध हों, उनका त्याग कर देना चाहिये। उचित मर्यादा के भीतर ही काम स्वीकार्य है।

समलैंगिक यौन सम्बन्धों के पक्षधरों और मानवाधिकार के तथाकथित पैरोकारों को इस बात को ध्यान में रखना चाहिये कि समलैंगिक यौनाचार भारतीय संस्कृति में कभी भी मान्य नहीं रहा है। कभी कभार हुए अपवादों को समाज के सामान्य व्यवहार की संज्ञा नहीं दी जा सकती है। यह तो पशुवत् व्यवहार है। चिकित्सा विज्ञान भी इसे समाज के लिए घातक मानता है क्योंकि इससे एड्स जैसी भयंकर बीमारी फैलती है।

समलैंगिक यौन सम्बन्ध एक प्रकार की मानसिक बीमारी है, जिसका शिकार अधिकांशतः अबोध बच्चे बनते हैं। अतः इस बीमारी के लिए इलाज की आवश्यकता है, इसको कानूनी जामा पहनाने की नहीं। आम भारतीय का सिर तब शर्म से झुक जाता है जब देश का कानून मन्त्री अपने आकाओं के स्वर में स्वर मिलाकर न्यायालय के फैसले पर यह प्रतिक्रिया देता है कि गेंद हमारे पाले में है। हम अपने अधिकारों का प्रयोग कर लेंगे। क्या गांधीजी के जीवन मूल्यों के प्रति उनका कोई भी उत्तरदायित्व नहीं बनता है? क्या परस्पर सहमति के आधार पर बने अप्राकृतिक यौनाचार के समलैंगिक सम्बन्धों को वैध करार देने का कानून बनाकर वे देश का भला करेंगे?

इससे पूर्व एक वरिष्ठ मन्त्री ने 'लिव-इन-रिलेशनशिप' का प्रस्ताव रखा था, जिसका सम्पूर्ण देश ने विरोध किया था। हम मानते हैं कि यौन जीवन की दैहिक आवश्यकता है और संसार के संचालन के लिए आवश्यक माना गया है। लेकिन इसको व्यक्ति का गोपनीय और एकान्तिक मामला माना गया है और विश्व के सभी धर्मों व देशों में इसके लिए विवाह की संस्था को स्वीकार किया गया है। काम का सार्वजनिक प्रदर्शन समाज में विकृति उत्पन्न करता है। क्या कोई दम्पति भी आँगन अथवा चौराहे पर यौन सम्बन्धों को अंजाम दे सकते हैं? स्पष्टतः यौन व्यवहार के सम्बन्ध में समाज में कुछ नैतिक सर्वमान्य निर्णय हैं जिनका पालन सबके लिए अनिवार्य है। पशु और मनुष्य में भेद है। 'पश्यति इति पशुः' अर्थात् जो देखता भर है और देखे हुए का अनुसरण करता है, वह पशु है। 'मननात् मनुः' अर्थात् जो चिन्तन-मनन करने के उपरान्त निष्कर्ष निकालकर आचरण करे वह मनुष्य है। मनुष्य जीवन में दुर्गुण उत्पन्न होने पर नुकसान ही होता है। महावीर स्वामी ने इस सम्बन्ध में कहा है कि- 'मानव जीवन एक कमण्डलु के समान है। इसमें दुर्गुण रूपी एक भी छेद हुआ तो देर-सवेर यह डूबेगा ही।' एक दुर्गुण भी घोर पतन का कारण बन जाता है। बुरी सोच और कुकर्मों से बचने को शास्त्रों में भजन से भी बढ़कर माना गया है। शास्त्र विरुद्ध आचरण से धर्म निर्मूल होता है, और जो ऐसा करते हैं उन्हें सन्त तुलसीदास ने 'निशाचर' की संज्ञा दी है-

जेहि विधि होई धर्म निर्मूला। सो सब करहिं वेद प्रतिकूला।।
जेहि जेहि देस धेनु द्विज पावहिं। नगर गाँव पुर आग लगावहिं।।
बाढ़े बहु खल चोर जुआरा। जे लम्पट परधन परदारा।।
मानहिं मात पिता नहिं देवा। साधुन्ह सन करवावहिं सेवा।।
जिन्ह के यह आचरन भवानी। ते जानेहु निसिचर सब प्रानी।।

अतः दलगत एवं व्यक्तिगत स्वार्थों, वोट की राजनीति, तथाकथित प्रगतिशील एवं मानवाधिकारों के पैरोकारों और विकृत मानसिकता में जीने वालों, कुतर्कों के आधार पर अनैतिकता को नैतिकता का आवरण ओढ़ानेवालों के सभी तरह के दबावों से मुक्त होकर हमें भारतीय दण्ड संहिता की धारा ३७७ के सम्बन्ध में माननीय उच्चतम न्यायालय के फैसले को खुलेमन से स्वीकार करते हुए देश की न्याय व्यवस्था के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करना चाहिए जिसने दिल्ली उच्च न्यायालय के समलैंगिकता को वैध ठहराने के निर्णय को अमान्य करते हुए धारा ३७७ को वैध ठहराकर देश की संस्कृति का सम्मान किया है। इस सम्बन्ध में कानून में संशोधन करने की बात देश की संसद के पाले में डालने की बात भले ही माननीय उच्चतम न्यायालय ने कही है, किन्तु कानून निर्माताओं के समक्ष सबसे बड़ी जिम्मेदारी देश की उस विरासत को आगे बढ़ाने की है जिस पर आने वाली पीढ़ियाँ गर्व कर सकें। इसके विपरीत यदि कोई कदम उठाया गया तो देश उन्हें कभी क्षमा नहीं करेगा। एक शायर की दो पंक्तियाँ हमारे नीति निर्धारिकों को अवश्य ध्यान में रखनी चाहिये-

खुदा ने आज तक उस कौम की हालत नहीं बदली।
न हो जिसको ख्याल खुद अपनी हालत बदलने का।।

{माननीय उच्चतम न्यायालय ने इस सम्बन्ध में दायर पुनर्विचार याचिका को भी खारिज कर दिया है।}

१०८, प्रतापनगर, चित्तौड़गढ़

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹ ११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री आर.डी. गुप्त, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष,श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी.एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रहलादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ.वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र सक्सैना, कोटा

नवसंवत्सर पर मननीय लेख

विदेशी दासता की पहचान है जनवरी का नया साल

विनोद बंसल

जनवरी के नजदीक आते ही जगह-जगह जश्न मनाने की तैयारियाँ प्रारम्भ हो जाती हैं। करोड़ों रुपए का खर्चा नववर्ष की तैयारियों में खर्च हो जाता है। होटलों-रेस्तराँ, पब इत्यादि अपने-अपने ढंग से इसके आगमन की तैयारियाँ करने लगते हैं। हैप्पी न्यू ईयर के बैनर होर्डिंग पोस्टर व कार्डों के साथ दारू की दुकानों की भी चाँदी कटने लगती है।

कहीं-कहीं तो जाम से जाम इतने टकराते हैं कि घटनाऐं दुर्घटनाओं में बदल जाती हैं और मनुष्य मनुष्यों से तथा गाड़ियाँ गाडियों से भिड़ने लगते हैं। रात-रात भर जागकर नया साल मनाने से ऐसा प्रतीत होता है मानो सारी खुशियाँ

एक साथ आज ही मिल जायेंगी। हम भारतीय भी पश्चिमी अंधानुकरण में इतने सराबोर हो जाते हैं कि उचित अनुचित का बोध त्याग अपनी सभी सांस्कृतिक मर्यादाओं को तिलाञ्जलि दे बैठते हैं। पता ही नहीं लगता कि कौन अपना है और कौन पराया। क्या यही है हमारी संस्कृति या त्यौहार मनाने की परम्परा? एक जनवरी से प्रारम्भ होने वाली काल गणना को हम ईस्वी सन् के नाम से जानते हैं जिसका सम्बन्ध ईसाई जगत् व ईसा मसीह से है। इसे रोम के सम्राट जूलियस सीजर द्वारा ईसा के जन्म के तीन वर्ष बाद प्रचलन में लाया गया। भारत में ईस्वी सन् का प्रचलन अंग्रेजी शासकों ने १७५२ में किया। अधिकांश राष्ट्रों के ईसाई होने और अंग्रेजों के विश्वव्यापी प्रभुत्व के कारण ही इसे विश्व के अनेक देशों ने अपनाया। १७५२ से पहले ईस्वी सन् २५ मार्च से शुरू होता था किन्तु १८वीं सदी से इसकी शुरूआत एक जनवरी से होने लगी। ईस्वी कलेण्डर के महीनों के नामों में प्रथम छः माह यानि जनवरी से जून रोमन देवताओं (जोनस, मार्स व मया इत्यादि) के नाम पर हैं। जुलाई और अगस्त रोम के सम्राट जूलियस सीजर तथा उनके पौत्र आगस्टस के नाम पर तथा सितम्बर से दिसम्बर तक रोमन संवत् के मासों के आधार पर रखे गये। जुलाई और अगस्त, क्योंकि सम्राटों के नाम पर थे इसलिए दोनों ही इकत्तीस दिनों के माने गये अन्यथा कोई भी दो मास ३१ दिनों या लगातार बराबर दिनों की संख्या वाले नहीं हैं।

ईसा से ७५३ वर्ष पहले रोम नगर की स्थापना के समय रोमन संवत् प्रारम्भ हुआ जिसके मात्र दस माह व ३०४ दिन होते थे। इसके ५३ साल बाद वहाँ के सम्राट नूमा पाम्पीसियस ने जनवरी और फरवरी दो माह और जोड़कर इसे ३५५ दिनों का बना दिया। ईसा के जन्म से ४६ वर्ष पहले जूलियस सीजर ने इसे ३६५ दिन का बना दिया। सन् १५८२ ई. में पोप ग्रेगरी ने आदेश जारी किया कि इस मास के ०४ अक्टूबर को इस वर्ष का १४ अक्टूबर समझा जाये। आखिर क्या आधार है इस काल गणना का यह तो ग्रहों व नक्षत्रों की स्थिति पर आधारित होनी चाहिए।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् नवम्बर १९५२ में वैज्ञानिक और औद्योगिक परिषद के द्वारा पंचांग सुधार समिति की स्थापना की गयी। समिति ने १९५५ में सौंपी अपनी रिपोर्ट में विक्रमी संवत् को भी स्वीकार करने की सिफारिश की थी। किन्तु, तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू के आग्रह पर ग्रेगेरियन कैलेण्डर को ही सरकारी कामकाज हेतु उपयुक्त मानकर २२ मार्च १९५७ को इसे राष्ट्रीय कलेण्डर के रूप में स्वीकार कर लिया गया।

ग्रेगेरियन कलेण्डर की काल गणना मात्र दो हजार वर्षों के अति अल्प समय को दर्शाती है। जबकि यूनान की काल गणना ३५८२ वर्ष, रोम की २७५७ वर्ष, यहूदी ५७६८, मिस्र की २८६७१, पारसी १९८८७५ तथा चीन की ९६००२३०५ वर्ष पुरानी है। इन सबसे अलग यदि भारतीय काल गणना की बात करें तो हमारे ज्योतिष के अनुसार पृथ्वी की आयु एक अरब ९७ करोड़ ३९ लाख ४९ हजार ११४ वर्ष है। जिसके व्यापक प्रमाण हमारे पास उपलब्ध हैं। हमारे प्रचीन ग्रंथों में एक-एक पल की गणना की गयी है।

जिस प्रकार ईस्वी सम्वत् का सम्बन्ध ईसाई जगत् से है उसी प्रकार हिजरी सम्वत् का सम्बन्ध मुस्लिम जगत् और हजरत मुहम्मद साहब से है। किन्तु विक्रमी सम्वत् का सम्बन्ध किसी भी धर्म से न हो कर सारे विश्व की प्रकृति-भूगोल सिद्धांत व ब्रह्माण्ड के ग्रहों व नक्षत्रों से है। इसलिए भारतीय काल गणना पंथ निरपेक्ष होने के साथ सृष्टि की रचना व राष्ट्र की गौरवशाली परम्पराओं को दर्शाती है। इतना ही नहीं ब्रह्माण्ड के सबसे पुरातन ग्रंथ वेदों में भी इसका वर्णन है। नव संवत् यानि संवत्सरों का वर्णन यजुर्वेद के २७वें व ३०वें अध्याय के मंत्र क्रमांक क्रमशः ४५ व १५ में विस्तार से दिया गया है। विश्व में सौर मण्डल के ग्रहों व नक्षत्रों की चाल व निरन्तर बदलती उनकी स्थिति पर ही हमारे दिन, महीने, साल और उनके सूक्ष्मतम भाग आधारित होते हैं।

इसी वैज्ञानिक आधार के कारण ही पाश्चात्य देशों के अंधानुकरण के बावजूद, चाहे बच्चे के गर्भाधान की बात हो, जन्म की बात हो, नामकरण की बात हो, गृह प्रवेश या व्यापार प्रारम्भ करने की बात हो, सभी में हम तिथि की जानकारी प्राप्त करते हैं। भारतीय संस्कृति श्रेष्ठता की उपासक है। जो प्रसंग समाज में हर्ष व उल्लास जगाते हुए एक सही दिशा प्रदान करते हैं उन सभी को हम उत्सव के रूप में मनाते हैं। राष्ट्र के स्वाभिमान व देश प्रेम को जगाने वाले अनेक प्रसंग चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से जुडे हुए हैं। यह वह दिन है जिस दिन से भारतीय नव वर्ष प्रारम्भ होता है। यह सामान्यतः अंग्रेजी कलेण्डर के मार्च या अप्रेल माह में पड़ता है। इसके अलाबा जापान फ्रांस, थाईलैण्ड, इत्यादि अनेक देशों के नव वर्ष भी इसी दौरान पड़ते हैं। आइये इस दिन की महानता के प्रसंगों को देखते हैं :-

ऐतिहासिक महत्व

वर्ष पूर्व इसी दिन के सूर्योदय से प्रभु ने जगत् की रचना प्रारंभ की।

प्रभु श्री राम, चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य व धर्मराज युधिष्ठिर का राज्याभिषेक भी इसी दिन हुआ था।

शक्ति और भक्ति के नौ दिन अर्थात्- नवरात्र स्थापना का पहला दिन यही है।

प्रभु राम के जन्मदिन रामनवमी से पूर्व नौ दिन का श्री राम महोत्सव मनाने का प्रथम दिन।

आर्य समाज स्थापना दिवस, सिख परंपरा के द्वितीय गुरु अंगददेव जी, संत झूलेलाल व राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संस्थापक डॉ.केशव राव बलीराम हैडगेवार का जन्मदिवस।

प्राकृतिक महत्व

वसंत ऋतु का आरंभ वर्ष प्रतिपदा से ही होता है जो उल्लास-उमंग-खुशी तथा चारों तरफ पुष्पों की सुगंधि से भरी होती है। फसल पकने का प्रारम्भ यानि किसान की मेहनत का फल मिलने का भी यही समय होता है।

क्या एक जनवरी के साथ ऐसा एक भी प्रसंग जुड़ा है जिससे राष्ट्र प्रेम जाग सके, स्वाभिमान जाग सके या श्रेष्ठ होने का भाव जाग सके मैकाले की अंग्रेजी शिक्षा पद्धति का ही नतीजा है कि आज हमने न सिर्फ़ अंग्रेजी बोलने में हिन्दी से ज्यादा गर्व महसूस किया बल्कि अपने प्यारे भारत का नाम संविधान में भी इंडिया दैट इज भारत तक रख दिया। इसके पीछे यही धारणा थी कि भारत को भूल कर इंडिया को याद रखो क्योंकि यदि भारत को याद रखोगे तो भरत याद आएँगे, शकुन्तला व दुष्यन्त याद आएँगे, हस्तिनापुर व उसकी प्राचीन सभ्यता और परम्परा याद आएगी।

आइये! विदेशी दासत्व को त्याग स्वदेशी अपनाऐं और गर्व के साथ भारतीय नव वर्ष यानि विक्रमी संवत् को ही मनायें तथा इसका अधिक से अधिक प्रचार करें।

३२९-ए संत नगर, पूर्वी कैलाश, नई दिल्ली-११००६५
चल दूरभाष : ०९८१०९४९१०९

श्री पूनम सूरी का किया गया सम्मान

जयपुर के वैशाली नगर के डी.ए.वी.सेन्टीनरी पब्लिक स्कूल में आयोजित सर्वेष्टि यज्ञ महोत्सव, 'आओ श्रद्धा के साथ आनन्द की ओर चलें' कार्यक्रम के विशाल मंच पर मुख्य अतिथि माननीय पूनम सूरी का आर्यों द्वारा सम्मान किया गया। इस अवसर पर श्री टी.आर. गुप्ता, श्री एस.के.शर्मा, श्री सतपाल आर्य, डॉ. राजेश कुमार, श्री एम.एल. गोयल, श्री अशोक कुमार शर्मा, श्री अर्जुनदेव चड्ढ़ा व श्री अरविन्द पाण्डे उपस्थित थे। कार्यक्रम बड़े ही भव्य प्रकार से आयोजित हुआ।

- अरविन्द पाण्डे

गुरुकुल प्रभात आश्रम का वार्षिकोत्सव

गुरुकुल प्रभात आश्रम टीकरी भोलाझाल मेरठ का वार्षिकोत्सव १३ व १४ जनवरी २०१४ में पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती कुलाधिपति के नेतृत्व में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अथर्ववेद पारायण महायज्ञ के अतिरिक्त नव प्रविष्ट ब्रह्मचारियों का उपनयन व वेदारम्भ संस्कार भी हुआ। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने शारीरिक व बौद्धिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इस अवसर पर 'वैदिक वांगमय में भूगोल' इस विषय पर वेद संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया।

-आचार्य वाचस्पति, मंत्री

स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस श्रद्धा के साथ मनाया गया

अलवर शहर की समस्त आर्य समाजों और आर्य शिक्षण संस्थाओं के सहयोग से उक्त समारोह बड़े श्रद्धा के साथ आर्य समाज, अरावली विहार, काला कुँआ, अलवर में मनाया गया। शहर के अतिरिक्त आसपास के गाँवों से पधारे सैंकड़ों भाई बहिनों ने भाग लिया। समारोह की अध्यक्षता पंडित अमरमुनि, महामंत्री, आर्य प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा, राजस्थान ने की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता, एडवोकेट थे व विशिष्ठ अतिथि नगर विकास प्रन्यास अलवर के पूर्व अध्यक्ष श्री प्रदीप कुमार आर्य थे। इस अवसर पर विद्वद्जनों के प्रेरक उद्बोधन के अतिरिक्त छात्राओं ने बहुत ही अच्छे प्रदर्शन प्रस्तुत किए।

- धर्मवीर आर्य, मंत्री आर्य समाज अरावली विहार

अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल व अशफाक उल्ला की स्मृति मनाई गई।

आर्य समाज, रामपुरा, कोटा द्वारा संचालित मातृ सेवा सदन, बालिका प्राथमिक विद्यालय, एवं बाल भारतीय शिशुशाला के संयुक्त तत्वावधान में रामप्रसाद बिस्मिल व अशफाकउल्ला को श्रद्धांजलि दी गई। इस अवसर पर आर्य समाज, रामपुरा, कोटा के मंत्री श्री डी.पी. मिश्रा व आर्य परिवार संस्था के मंत्री श्री इन्द्र कुमार सक्सेना ने उद्बोधन प्रदान करते हुए कहा कि दोनों क्रान्तिकारी देश के लिए हँसते-हँसते फाँसी के फन्दे पर झूल गए। इस अवसर पर आर्य समाज, भीमगंज मंडी के पूर्व मंत्री श्री राजेन्द्र आर्य, श्री प्रेमनाथ कौशल, श्री रघुवीर सिंह कुशवाह, श्री राजेन्द्र सक्सेना, श्री पी.सी. मित्तल आदि ने भी बिस्मिल के जीवन से संबंधित रोचक संस्मरण सुनाये।

- डी.पी.मिश्रा

सामाजिक सुधारों के अग्रदूत थे महर्षि दयानन्द

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, गड़ेपान कोटा में आयोजित 'हमारे प्रेरणास्रोत स्वामी दयानन्द' विषय पर आयोजित व्याख्यान माला में वैदिक विद्वान् आचार्य अग्निमित्र ने अपने उद्बोधन में ऋषि दयानन्द के सुधार कार्यक्रमों की विस्तृत चर्चा करते हुए बताया कि ऋषि ने समाज से अन्धविश्वास व पाखण्ड को दूर किया। इस अवसर पर आर्य विद्वान् रामप्रसाद याज्ञिक का उद्बोधन भी सारगर्भित रहा।

-अर्जुन देव चड्ढ़ा, प्रधान जिला सभा कोटा

आर्य समाज मंदिर में कार्यक्रम

आर्य समाज मंदिर, शाहपुरा में दिनांक २३ दिसम्बर २०१३ सोमवार को अमरशहीद स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस मनाया गया। स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन के बारे में प्रधान श्री कन्हैया लाल आर्य व उप प्रधान श्री हीरालाल आर्य आदि ने अपने विचार रखे और प्रेरणा प्रदान की।

- सत्यनारायण तोलम्बिया, मंत्री आर्य समाज, शाहपुरा

आर्य समाज कटनी के निर्वाचन सम्पन्न

आर्य समाज कटनी के द्विवार्षिक चुनाव श्री रामप्रसाद मिश्र एवं हरीशचन्द्र सूरी के निर्देशन व श्री योगेश मिश्रा के संचालन में सम्पन्न हुए। इस अवसर श्री अश्विनी सहगल को प्रधान और श्री योगेश मिश्रा को मंत्री पद का दायित्व सौंपा गया। आर्य समाज कटनी के समस्त नवनिर्वाचित अधिकारियों को सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक बधाई

आर्य समाज, सरदारपुरा, जोधपुर के संरक्षक श्री हरेन्द्र कुमार आर्य और प्रधान श्री एल.पी.वर्मा के निर्देशन में मंत्री श्री मदन लाल गहलोत एवं साथियों के प्रभूत परिश्रम से आर्य समाज सरदारपुरा का ६८वां वार्षिकोत्सव अतीव सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम को सफल बनाने में आर्य समाज, शास्त्रीनगर व महिला आर्य समाज, सरदारपुरा का विशेष सहयोग रहा।

- लक्ष्मण सिंह आर्य, कोषाध्यक्ष

महर्षि दयानन्द निर्वाणोत्सव मनाया गया

आर्य समाज द्वारा दीपावली व महर्षि दयानन्द निर्वाणोत्सव समारोहपूर्वक प्रतापनगर, दादाबाड़ी में मनाया गया। प्रवक्ता श्री राजेन्द्र आर्य ने बताया कि वैदिक विद्वान् पंडित शिवनारायण उपाध्याय ने इस अवसर पर अपने उद्बोधन में कहा कि महापुरुषों के जीवन से तो असंख्य लोगों के जीवन बदलते ही हैं परन्तु उनकी मृत्यु भी कई लोगों के जीवन बदल देती है। हाड़ौती की प्रसिद्ध भजनगायिका श्रीमती मृदुला सक्सेना ने भी 'अंतिम देख विदाई ऋषि की काल स्वयं अकुलाया' सुनाकर अपनी श्रद्धांजलि दी।

- राजेन्द्र कुमार आर्य, वैदिक प्रवक्ता

आर्टिस्ट सुदर्शन वर्मा नहीं रहे

उदयपुर के सुप्रसिद्ध आर्टिस्ट, कवि, साहित्यकार, शायर का दिनांक ४/१/२०१४ (बसन्त पंचमी) को निधन हो गया। श्री सुदर्शन वर्मा के स्केच के आधार पर ही महाराणा प्रताप स्मारक मोती मगरी पर स्थापित मूर्तियों (राणा प्रताप के अलावा) का निर्माण हुआ। इसी प्रकार उन्होंने मोती मगरी पर स्थापित आर्ट गैलेरी में भी अनेक तैल चित्रों का सृजन कर महाराणा प्रताप एवं मेवाड़ को गौरव प्रदान किया। नवलखा महल में स्थित चित्र दीर्घा (आर्यावर्त्त) में महर्षि दयानन्द जी की जीवनी पर आधारित अनेक चित्रों का निर्माण इनके द्वारा ही किया गया है। उनके पुत्र श्री यशोवर्धन वर्मा भी न्यास के वर्तमान स्वरूप को अद्वितीय बनाने हेतु चित्रों के निर्माण में प्रयासरत् हैं। न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार दिवंगत आत्मा को हार्दिक श्रद्धांजलि सम्प्रेषित करता है।

श्री अनन्तदेव शर्मा का सम्मान

श्री अनन्तदेव शर्मा एक ऐसे निष्ठावान आर्य हैं जिनकी तुलना विरल है। आप घूम-घूमकर घर-घर में पहुँच वैदिक संस्कार हेतु जन-जन को प्रेरणा देते हैं व सुन्दरता के साथ सभी संस्कार सम्पन्न भी कराते हैं। आपकी निःस्वार्थ सेवा से आर्यसमाज का नाम रौशन हो रहा है। आर्यसमाज हिरणमगरी-से.४, उदयपुर ने अपना कर्त्तव्य समझ श्री शर्मा का माला, शॉल, श्रीफल व पाग पहनाकर सम्मान किया तथा उनकी सेवा में अभिनन्दन-पत्र प्रस्तुत किया गया। सरल सदाचारी स्वभाव के धनी श्री अनन्त देव शर्मा का समूचा व्यक्तित्व एवं कृतित्व हम सबके लिए अनुकरणीय है। इस कार्यक्रम में अभिनन्दन पत्र वाचन एवं सुन्दर संचालन आर्य समाज हिरण मगरी के उप मंत्री श्री भूपेन्द्र शर्मा ने किया। न्यास व सत्यार्थ सौरभ परिवार श्री अनन्तदेव जी के निरामय दीर्घायुष्य हेतु प्रभु से प्रार्थना करता है।

श्री धर्मसिंह कोठारी का निधन

श्री धर्मसिंह कोठारी के रूप में आर्यसमाज ने एक और मनीषी को खो दिया है। श्री कोठारी अनेक विधाओं पर असाधारण अधिकार रखते थे। वे एक सिद्धहस्त आयुर्वेदाचार्य, प्रखर विचारक व ओजस्वी वक्ता थे। ऋषि के ग्रन्थों के परिरक्षण हेतु उनका पुरुषार्थ पूर्ण समर्पण जानकारों के समक्ष उन्हें उच्च सोपान पर अवस्थित कर देता है। उन्होंने स्वयं के परिवार में भी वैदिक सद्धर्म के बीजों का सफलतापूर्वक वपन किया जो प्रो. आर. एस. कोठारी, श्री सुदर्शन कोठारी, लोकायुक्त माननीय सज्जन सिंह जी कोठारी, सहायक पुलिस आयुक्त श्री हर्ष कोठारी जैसे व्यक्तित्वों के रूप में फलित है।

श्री कोठारी जी का निधन उनके परिवार की ही नहीं सम्पूर्ण आर्य जगत् की अपूरणीय क्षति है। न्यास परिवार व सत्यार्थ सौरभ परिवार कोठारी परिवार के प्रति शोक संवेदना प्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि वे दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें।

उड़ीसा गुरुकुल में, श्री शिवनारायण उपाध्याय सम्मानित

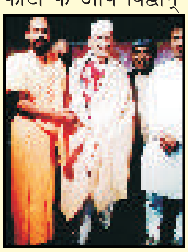

कोटा के आर्य विद्वान् आर्य समाज रामपुरा कोटा के प्रधान श्री शिवनारायण उपाध्याय को उड़ीसा में गुरुकुल हरिपुर जिला नुवापाड़ा में गुरुकुल के आचार्य श्री सुदर्शन जी महराज द्वारा सम्मानित किया गया। श्री शिवनारायण उपाध्याय को गुरुकुल के आचार्य द्वारा ३१००/- नकद एवं शॉल ओढ़ाकर तथा श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया गया एवं 'लेखवीर' की उपाधि से विभूषित किया गया। वेद और विज्ञान पर जो काम श्री शिव नारायण उपाध्याय ने किया है उसे अतुलनीय बताया।

- डी. पी. मिश्रा, कोटा

उदयपुर में RUN FOR WISDOM

महर्षि दयानन्द जयन्ती पर सम्पन्न

विवेकपूर्ण चिन्तन और तदाधारित कर्म सम्पादन केवल मनुष्य योनि की विशेषता है। परन्तु मनुष्य ने इस विशेषता को नजरअन्दाज कर रखा है फलस्वरूप नाना प्रकार के अन्धविश्वास मानव जाति का बौद्धिक विनाश कर रहे हैं। आज यह समस्या सबसे बड़ी है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने युगों-युगों के पश्चात् इस ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया। यह युग विज्ञान का युग है अतः इसमें सृष्टि के नियमों से विपरीत धारणाओं का कोई स्थान नहीं होना चाहिए। परन्तु इससे ठीक विपरीत हम अन्धविश्वास में आकण्ठ डूबे हुए हैं। इससे पूर्ण छुटकारा मानव जाति को अभीष्ट है। यह उद्बोधन श्रीमद्दयानन्द स.प्र. न्यास के तत्वावधान में आयोजित (RUN FOR WISDOM) के अवसर पर उपस्थित सहस्रों छात्र-छात्राओं के समक्ष न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष अशोक आर्य द्वारा दिया गया। इससे पूर्व कार्यक्रम के संयोजक डॉ. ए. एल. तापड़िया ने कार्यक्रम के उद्देश्य को रेखांकित करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द द्वारा आर्यसमाज के नियमों के अन्तर्गत 'अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए' के ध्येय वाक्य के प्रति जन-जागरण है हेतु यह कार्यक्रम रक्खा गया है।

कार्यक्रम के सहसंयोजक संजय शाण्डिल्य तथा सुरेश मित्तल ने बताया कि इस दौड़ में १९ विद्यालयों के ९५० छात्र-छात्राओं ने सोत्साह भाग लिया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ दूधतलाई से श्री टी. सी. डामोर, कुलपति- राजीव गाँधी जनजाति विश्वविद्यालय, उदयपुर तथा श्री फूल सिंह मीणा, विधायक- उदयपुर ग्रामीण द्वारा हरी झण्डी दिखाने से हुआ। दौड़ का समापन नवलखा महल में हुआ। केसरिया रंग की 'ओ३म्' टोपी लगाए छात्रों के दल अत्यन्त शोभायमान हो रहे थे। उनका उत्साह अपूर्व था। सभी छात्र-छात्राओं को अल्पाहार तथा सत् साहित्य प्रदान किया गया। कार्यक्रम का सुन्दर संचालन श्री संजय शाण्डिल्य तथा डॉ. नरेन्द्र सनाढ्य द्वारा किया गया। न्यास मंत्री- श्री भवानीदास आर्य ने सभी को भावभीना धन्यवाद ज्ञापित किया।

विमलेश बंसल

नववर्ष-स्वागतम्

मित्रो मैं ही नया साल हूँ, मुझको देखो बेमिसाल हूँ।।
सुरभित मंद हँसे फुलवारी, झूमे नाचे वसुधा सारी।
नव यौवन उद्‌गम विशाल हूँ।। मित्रो .... ।
हर मौसम का राजा भी मैं, स्वर लहरी का बाजा भी मैं।
खग कलरव तरु तड़ित ताल हूँ।। मित्रो .... ।
ज्ञान कर्म मेरी उपासना, भोग विकृति नहीं वासना ।
मैं अमृत का मधुर प्याल हूँ।। मित्रो .... ।
जनवरी की ठिठुरन ना मैं, दबी संकुचित सिकुड़न ना मैं।
युवक बड़ा ना वृद्ध बाल हूँ।। मित्रो .... ।
सभी फुदकते मौज मनाते, हास्य कवि लेखक भी गाते।
अनुपमेय उपमा कमाल हूँ।। मित्रो .... ।
मैं हूँ सबका दोस्त पुराना, संत पंथ सद्‌ग्रन्थ बखाना।
विमल धवल नव मालामाल हूँ।। मित्रो .... ।
मुझको जानो व पहिचानो, जीवन ताना मुझसे तानो।
हल हूँ ना उलझा सवाल हूँ।। मित्रो .... ।
आओ मिल जुल हाथ बढ़ाएँ, निज संस्कृति का मान बढ़ाएँ।
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा काल हूँ।। मित्रो .... ।

-३२९ द्वितीय तल संत नगर,
पूर्वी कैलाश, नई दिल्ली-११००६५

आर्यसमाज स्थापना दिवस पर विशेष

मठगुलनी का संघर्ष

यश की धरोहर

सभा (बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा) कार्यालय को विदित हुआ कि ईसाई प्रचारक इस समय गया जिला के हरिजनों को बहकाने लगे हैं। उनका मुख्य प्रचार केन्द्र मठगुलनी है। मठगुलनी नवादा से पकरीवरांवा की ओर जो सड़क जाती है। उससे चार मील दूर कच्ची सड़क के सामने है। वही सड़क शेखोदोरा को जाती है। हरिजनों की बस्ती के कारण रोमन कैथोलिक मिशन ने वहाँ एक चर्च बनाया है। चर्च में प्रति शनिवार को आसपास के हरिजन बुलाये जाते थे। उनका सामूहिक भोजन होता था। जब भोजन तैयार हो जाय तो पादरी उसे उच्छिष्ट करता था, तब हरिजन उसे खाते थे। इसलिए वे स्वभावतः अपने को ईसाई समझने लगे थे। सभा ने अपने प्रचारक को भेजा ताकि वे वहाँ की जनता को ईसाइयों की गतिविधि से परिचित करायें। परिणामस्वरूप मठगुलनी में जागृति हुई। ईसाई प्रचारक श्री गाजो जिब्राइल शुद्ध होकर हिन्दू धर्म में दीक्षित हो गये। गाजो चमार नेता थे। उनके हिन्दू धर्म में आते ही सभी चमार, जो ईसाई बने थे, वे सब हिन्दू धर्म में दीक्षित हो गये। चमारों ने चर्च के सामने ही अपनी जमीन आर्य समाज को दान में दी तथा स्वयं ईंट बनाकर आर्य समाज मन्दिर का निर्माण भी कराया। एक सज्जन ने वहाँ कूप का निर्माण भी करा दिया। आर्यसमाज के प्रचार का परिणाम यह हुआ कि हरिजनों ने चर्च में जाना बन्द कर दिया। चर्च के पास पादरी मैथ्यू ने जो कॉलोनी बनाई थी, वहाँ भी एक परिवार ने हिन्दू बनकर अपने घर पर 'ओ३म्' का झण्डा लगा दिया। वहाँ आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव धूमधाम से होने लगा। १९५४-५५ ई. की रिपोर्ट, जो सभामंत्री ने साधारण सभा में दी थी, उसका निम्नोद्धृतांश महत्वपूर्ण है-

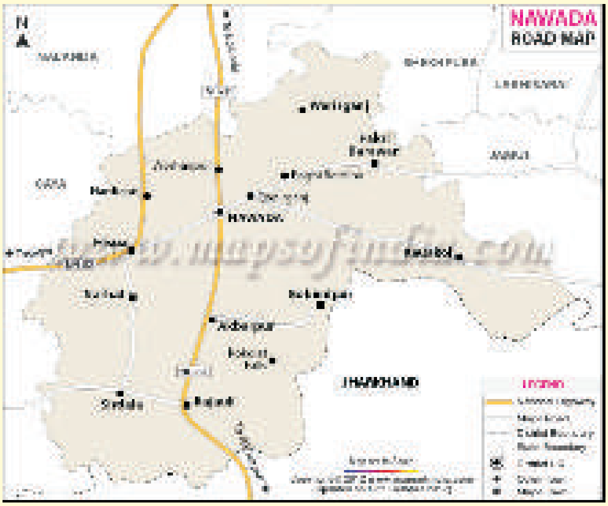

इस वर्ष आर्यसमाज मठगुलनी(गया) का वार्षिकोत्सव अपना एक विशेष महत्व रखता है। यह गाँव गया से सुदूर स्थान में अवस्थित है। आज से कुछ वर्ष पूर्व यहाँ ईसाई प्रचारकों का गढ़ सा था, आज यहाँ चर्च के ठीक सामने आर्य समाज की भूमि तथा भवन है। उत्सव के अवसर पर पार्श्ववर्ती गाँवों से १० हजार की संख्या में जनता ने भाग लिया। वहाँ मेला लग रहा था। एक बड़ा सम्मेलन आर्य समाजियों तथा प्रत्येक श्रेणी के कार्यकर्ताओं का हुआ। अध्यक्षता पूज्य स्वामी अभेदानन्द जी महाराज ने की। इसमें सभा के मंत्री ने आर्य समाज की गतिविधि के साथ ईसाइयों के प्रति सभा की नीति की विशेष चर्चा की। उत्सव के दूसरे दिन बिहार सरकार के मंत्री श्री शिवनन्दन प्रसाद मंडल विकट मार्ग तय करते हुए मठगुलनी पधारे।

आर्य समाज ईसाइयों की आँख में खटकने लगा। वहाँ के पादरी मैथ्यू ने एक दिन पुलिस की डायरी में लिखवा दिया कि गिरजाघर में डकैती हुई है, जिसमें नौ या दस आदमी थे। उनमें श्री गाजो जिब्राइल का नाम विशेष रूप से दिया गया। पुलिस ने मामले की जाँच की। उस दिन गाजो पटना में थे। लम्बे केस के बाद आर्य समाज के सभी आदमी निर्दोष साबित हुए। इस प्रकार छोटी बड़ी घटनायें बराबर घटती रहीं। एक हरिजन परिवार की जमीन चर्च के समीप पड़ती थी, एक भाई ने यह जमीन चर्च को दे दी थी, किन्तु दूसरा भाई नहीं चाहता था कि उसकी जमीन चर्च को जाय। उसने अपने खर्च से जाकर अपनी शेष जमीन आर्यसमाज को प्रदान कर दी तथा बाजाब्ता उसकी रजिस्ट्री भी कर दी। अब यह ऐसी घटना थी जिससे ईसाईलोग आर्यसमाज से बिल्कुल अप्रसन्न हो गए। ईसाइयों ने एक योजना बनाई जिससे वे आर्यसमाज मठगुलनी को समाप्त कर देना चाहते थे।

फादर मैथ्यू ने आर्यसमाजियों के विरुद्ध एक अभियोग का षड्यंत्र किया तथा आरोप यह लगाया कि जिस समय सभी ईसाई प्रार्थना में थे, तभी आर्य समाजियों ने बन्दूक आदि से लैस होकर सशस्त्र आक्रमण करके चर्च को लूट लिया तथा गिरजाघर को अपवित्र कर दिया। इस केस में श्री भूपनारायणसिंह, श्री मोतीलाल, मंत्री,आर्य समाज मठगुलनी आदि अभियुक्त थे। यह केस बहुत भीषण था। इसकी चर्चा भारतीय संसद में श्री पंडित जवाहर लाल जी, प्रधानमंत्री,

इतिहास साक्षी है कि विधर्मियों द्वारा किए जा रहे धर्मान्तरण के कुचक्र के दुष्परिणाम को सर्वप्रथम आर्यसमाज ने पहचाना तथा न केवल अनेकानेक कष्ट सहन कर उसका प्रतिकार किया वरन् शुद्धि-आन्दोलन का प्रवर्तन कर इन विधर्मियों को हतप्रभ कर दिया। ऐसे असंख्य प्रयासों में से एक का विवरण आर्यसमाज स्थापना दिवस के अवसर पर पाठकों की सेवा में प्रस्तुत है।

-संपादक

भारत ने भी की थी। ईसाई पत्रों ने इसको बड़ा भारी महत्व दिया। कहा गया कि कुमारी मरियम की मूर्ति तोड़ी गई, सक्रामेंट नष्ट किया गया, बाइबिल की पुस्तक फाड़ी गई आदि। स्थानीय ईसाइयों का पत्र 'संजीवन' तो आर्यसमाज के पीछे पड़ गया। उसने विचाराधीन अभियोग को एकतरफा छापा। आर्य प्रतिनिधि सभा ने जब कोर्ट का ध्यान इस ओर दिलाया तो मानहानि का केस नवादा की अदालत में 'संजीवन' पत्र के विरुद्ध आरम्भ हुआ। ईसाइयों की ओर से

पटना के नामी नामी वकील बहस करने गये। मानहानि का अभियोग खारिज हो गया। अब असली अभियोग की बात थी। अनेक कारणों से तथा मठगुलनी के आर्य कार्यकर्ताओं की कानूनी अनभिज्ञता से ९ आदमियों को सजा हो गई। उन पर तीन तीन सौ रु. जुर्माना भी हुआ। जुर्माना की रकम न देने पर तीन माह और सजा भुगतनी पड़ी। यह निर्णय २३ मई १९५६ के दिन सुनाया गया था।

आर्य प्रतिनिधि सभा, बिहार ने इस अभियोग को अपने हाथों में लेकर पर्याप्त पैरवी की, पर उसे सफलता नहीं मिली। निचली अदालत के फैसले के विरुद्ध गया के सेशन जज के न्यायालय में अपील की गई, पर वहाँ भी आर्य समाज को सफलता प्राप्त नहीं हो सकी। सभा की इच्छा थी कि सेशन जज के निर्णय के विरुद्ध हाइकोर्ट में अपील की जाए। पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आदेश के अनुसार हाईकोर्ट में अपील का विचार छोड़ दिया गया। स्थानीय वकीलों की भी यही सम्मति थी। जिन ९ व्यक्तियों को जेल की सजा दी गई थी, उनमें से आठ ने कारागार की यातना सहन की, और जुर्माना भी अदा कर दिया। नवें अभियुक्त श्री रघुनाथ द्विवेदी की जेल जाने से पहले ही मृत्यु हो गई।

यद्यपि मठगुलनी काण्ड के मुकदमे में आर्यसमाज को न्याय प्राप्त नहीं हुआ था, पर इसके कारण विदेशी क्रिश्चियन मिशनरियों के अवैध धर्म प्रचार का विरोध व प्रतिरोध करने में आर्य समाज ने शिथिलता नहीं आने दी। बिहार के छोटा नागपुर क्षेत्र में बहुत सी जनजातियों का निवास है। क्रिश्चियन मिशनरी वहाँ बहुत सक्रिय थे। उनके कार्य को विफल करने के उद्देश्य से राँची आर्य समाज ने राँची जिला आर्य सभा की स्थापना की, और उसके तत्वावधान में अनेक उपदेशक व संन्यासी जनजातियों के क्षेत्र में प्रचार के लिए प्रवृत्त हुए। इस क्षेत्र में आर्य समाज के प्रचार के लिए एक व्यापक योजना तैयार की गई, और जुलाई १९५८ ई. में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी अभेदानन्द जी सरस्वती ने आचार्य पंडित रामानन्द शास्त्री के साथ छोटा नागपुर क्षेत्र में प्रचार यात्रा की। राँची, लोहरदगा, खूंटी, चद्रधरपुर, चाईवासा, हजारीबाग आदि कितने ही स्थानों पर उन्होंने भाषण दिए और जनता को ईसाई पादरियों के राष्ट्र विरोधी कार्यकलाप के प्रति सावधान रहने की प्रेरणा दी। इस क्षेत्र के निवासी सन्थाल लोगों को ईसाइयों के प्रचार से बचाने के लिए आर्यसमाज ने विशेष तत्परता प्रदर्शित की। वहाँ कार्यकर्ताओं के सन्थाल परगना जिले के सब आर्यसमाजों का एक सम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन द्वारा सफा होड़ (सन्थाल सुधार समिति) नामक एक संस्था गठित की गई, जिसका मुख्य कार्य सन्थालों को पादरियों के प्रभाव से बचाना था।

साभार- आर्यसमाज का इतिहास (छठा भाग)

इस विवरण में जातिगत शब्दों का प्रयोग तत्कालीन सामाजिक अवस्था के दिग्दर्शन के तौर पर है। इसमें अन्य कोई भावना नहीं है। आर्यसमाज जन्माधारित जाति-व्यवस्था को मान्य नहीं करता न इस आधार पर किसी को हेय या अस्पृश्य मानता।

-अशोक आर्य
०९३१४२३५१०१, ०९००१३३९८३६

नजरों के आर-पार, खूब बरसाओ प्यार, रुठों की हो मनुहार सबको मनाइए
हों विचार नेक, दिल मिल बन जाएँ एक, प्रीत की सितार पर, ऐसे गीत गाइए
हो शृंगार मौसम का, सौरभ के झरनों से, सबको ही दौड़कर, दिल से लगाइए
धरा पे हो ऐसा रंग, देव भी तरस उठें, प्रेम का खजाना सारा, प्रेम से लुटाइए

- अरुण मित्तल

होलिकोत्सव पर समस्त आर्य भाई-बहिनों को अनेकानेक शुभकामनाएँ – शुद्धबोध शर्मा (न्यासी)

गृहस्थाश्रम-वैदिक स्वर्ग का मूलाधार

(सत्यार्थ प्रकाश चतुर्थ समुल्लास के आधार पर)

विशुद्ध वैदिक धर्म के अतिरिक्त सभी मत पंथ यह मान रहे थे कि स्वर्ग तथा नरक इस संसार से दूर कहीं ऊपर-नीचे या कहीं अन्यत्र हैं। लेकिन आधुनिक युग के महान् विचारक एवं वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती गृहस्थाश्रम को ही स्वर्ग मानते हैं। उन्होंने कहा कि स्वर्ग तथा नरक इसी संसार में है। उनकी यह विशेषता रही है कि स्वयं आदित्य अखण्ड ब्रह्मचारी होते हुए भी जन-कल्याण के दृष्टिकोण से उन्होंने अपने पवित्र ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' में गृहाश्रम की सुंदर एवं व्यावहारिक रूपरेखा प्रस्तुत की है।

गृहस्थ का स्वरूप और उद्देश्य महर्षि दयानन्द सरस्वती के शब्दों में इस प्रकार है-

''जो ऐहिक और पारलौकिक सुख प्राप्ति के लिए विवाह करके अपने सामर्थ्य के अनुसार परोपकार करना और नियतकाल में यथाविधि ईश्वरोपासना और गृहकृत्य करना और सत्य धर्म में ही अपना तन-मन-धन लगाना तथा धर्मानुसार सन्तानों की उत्पत्ति करना- इसी का नाम गृहाश्रम संस्कार है।''

लोक में प्रचलित जो स्वर्ग-सम्बन्धी चर्चाए तथा मान्यताएँ हैं उन पर चिन्तन करना भी समीचीन होगा। स्वर्ग विषयक किंवदन्तियाँ और चर्चाएँ ऐसी मनमोहक हैं कि प्रत्येक मनुष्य स्वर्ग प्राप्ति के लिए उत्सुक हो उठता है। स्वर्ग विषयक दो चर्चाएँ तो बहुत ही प्रचलित हैं- (१) स्वर्ग ऊपर है (२) स्वर्ग की प्राप्ति मृत्यु के उपरान्त होती है।

स्वर्ग विषयक कल्पनाएँ

(क) पौराणिक कल्पना

पौराणिक मान्यता के अनुसार स्वर्ग एक ऐसा स्थान विशेष है, जहाँ सभी, सुखोपभोग की सामग्री से संयुक्त होकर प्रत्येक प्रकार से प्रसन्न रहते हैं। इसी स्थान को ब्रह्मलोक, देवलोक भी कहते हैं। 'यम' यहाँ का दण्डाधिकरी तथा चित्रगुप्त यहाँ का न्यायाधीश, इन्द्र यहाँ का शासक है। चित्रगुप्त भूलोकवासी प्राणियों के कार्यों का लेखा जोखा कर उनको यथावत् कर्मफल भोगने हेतु मृत्यु के पश्चात् स्वर्ग या नरक में भेजने का निर्णय करता है।

(ख) जैन मतानुसार

'रत्नसार' भाग-१ पृष्ठ २३ पर महावीर जी तीर्थंकर गौतम जी से कहते हैं कि ऊर्ध्वलोक में एक 'सिद्धशिला' नामक स्थान है। यह शिला स्वर्गपुरी के ऊपर पैंतालीस लाख योजन लम्बी, उतनी ही चौड़ी, पोली तथा आठ-योजन मोटी है। जैसे मोती का श्वेताहार या गोदुग्ध है, उससे भी उजली और सोने के समान प्रकाशमान स्फटिक से भी निर्मल है। यह सिद्धशिला चौदहवें लोक की शिखा पर है, सिद्धशिला के ऊपर शिवपुर धाम में मुक्त पुरुष अधर निवास करते हैं। वहाँ जन्म मरणादि कोई दोष नहीं, सभी आनन्द से रहते हैं। पुनः जन्म मरण में नहीं आते। सब कर्मों से छूट जाते हैं। ('सत्यार्थ प्रकाश', समुल्लास- १२)

(ग) ईसाई मतानुसार

ईसाई मतानुसार स्वर्ग (हैविन) भी 'वैटिकन सिटी' की तरह एक कोई स्थान विशेष ही प्रतीत होता है, यह बाइबिल के निम्नलिखित उद्धरण से प्रतीत होता रहा है-

''मैं तुमसे सच कहता हूँ कि धनवान को स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना कठिन होगा। फिर भी मैं तुमसे कहता हूँ कि ईश्वर के राज्य में धनवान् के प्रवेश करने से ऊँट का सुई के नाके में से निकल जाना सहज है।''

(इञ्जील म. प. १६ आयत २३-२४ ''स. प्रकाश'' समु. १३)

(घ) इस्लाम मतानुसार

इस्लाम की परिकल्पना के अनुसारः- ''तारीफ उस बहिश्त की प्रतिज्ञा किए गये है परहेजगार, बीच उसके नहरें हैं, बिना बिगड़े पानी की, और नहरें हैं दूध की नहीं बदला मजा उनका, और नहरें हैं शराब की मजा देने वाली वास्ते पीने वालों के, और नहरें है साफ किए गये शहद की और वास्ते बीच मेवे हैं प्रत्येक प्रकार से दान मालिक उनके से।'' ('सत्यार्थ प्रकाश', समुल्लास- १४। मंजिल ६। सि. २६। सूरत १७ आ. १५)

''रहने को जन्नत के बाग जिनके दरवाजे उनके लिए खुले रहें।।५।। उनमें तकिया लगाकर बैठेंगे, वहाँ जन्नत के नौकरों से बहुत मेवे और शराब मँगावेंगे।।५१।। उनके पास नीची नजर वाली बीवियाँ, हूरें होंगी और हमउम्र होंगे।।५२।। ('कुरान दर्पण' ८६, ले.डा. श्रीराम आर्य)

स्वर्ग विषयक उल्लिखित इन विभिन्न उद्धरणों से स्पष्ट है कि स्वर्ग एक विशेष स्थान की कल्पना है। जहाँ विविध सांसारिक विषयों की, उपभोग के लिए साधनों की विद्यमानता है। और यह मृत्यु के पश्चात् प्राप्य है। जबकि वैदिक मतानुसार गृहस्थाश्रम ही सच्चा स्वर्ग है।

- संपादक- अशोक आर्य

अलसी–प्रकृति का वरदान

पिछले कुछ दशकों में भारत समेत पूरे विश्व में डायबिटीज टाइप-२ के रोगियों की संख्या बढ़ती ही जा रही है व अब तो यह किशोरों और बच्चों को भी अपना शिकार बना रही है। डायबिटीज एक महामारी का रुप ले चुकी है। आइये हम जानने की कोशिश करते हैं कि पिछले कुछ दशकों में हमारे खान-पान, जीवनचर्या या वातावरण में ऐसा क्या बदलाव आया है।

शोधकर्ताओं के अनुसार जब से परिष्कृत यानी ''रिफाइन्ड तेल'' (जो बनते समय उच्च तापमान, हेग्जेन, कास्टिक सोडा, फोस्फोरिक एसिड, ब्लीचिंग क्ले आदि घातक रसायनों के संपर्क से गुजरता है), ट्रांसफेट युक्त पूर्ण या आंशिक हाइड्रोजिनेटेड वसा यानी वनस्पति घी, रासायनिक खाद, कीटनाशक, प्रिजर्वेटिव, रंग, रसायन आदि का प्रयोग बढ़ा है तभी से डायबिटीज के रोगियों की संख्या बढ़ी है। हलवाई और भोजनालय भी वनस्पति घी या रिफाइन्ड तेल का प्रयोग भरपूर प्रयोग करते हैं और व्यंजनों को तलने के लिए तेल को बार-बार गर्म करते हैं जिससे वह जहर से भी बदतर हो जाता है। शोधकर्ता इन्हीं को डायबिटीज का प्रमुख कारण मानते हैं।

पिछले तीन-चार दशकों से हमारे भोजन में ओमेगा-३ वसा अम्ल की मात्रा बहुत ही कम हो गई है और इस कारण हमारे शरीर में ओमेगा-३ व ओमेगा-६ वसा अम्लों का अनुपात १:४० या १:८० हो गया है जबकि यह १:१ होना चाहिये। यह भी डायबिटीज का एक बड़ा कारण है। डायबिटीज के नियंत्रण हेतु आयुवर्धक, आरोग्यवर्धक व दैविक भोजन अलसी को ''अमृत'' तुल्य माना गया है।

अलसी के तेल का अदभुत संरचना और ओमेगा की क्वांटम भौतिकीः

अलसी के तेल में अल्फा-लिनोलेनिक एसिड (ए.एल.ए.) नामक ओमेगा-३ वसा अम्ल होता है। डा. बुडविज ने ए.एल.ए. और एल.ए. वसा अम्लों की अदभुत संरचना का गूढ़ अध्ययन किया था। ए.एल.ए. में १८ कार्बन के परमाणुओं की लड़ी या शृंखला होती है जिसके एक सिरे से , जिसे ओमेगा एण्ड कहते हैं, मिथाइल (CH_3) ग्रुप जुड़ा रहता है और दूसरे से जिसे डेल्टा एण्ड कहते हैं, कार्बोक्सिल (COOH) ग्रुप जुड़ा रहता है। ए.एल.ए. में तीन द्वि बंध क्रमशः तीसरे, छठे और नवें कार्बन परमाणु के बाद होते हैं। चूँकि ए.एल.ए. में पहला द्वि बंध तीसरे और एल.ए. में पहला द्वि बंध छठे कार्बन के बाद होता है इसीलिए इनको क्रमशः ओमेगा-३ और ओमेगा-६ वसा अम्ल कहते हैं। ए.एल.ए. और एल.ए. हमारे शरीर में नहीं बनते, इसलिए इनको ''आवश्यक वसा अम्ल'' कहते हैं तथा इनको भोजन के माध्यम से लेना आवश्यक है। आवश्यक वसा अम्लों की कार्बन लड़ी में जहाँ द्वि-बंध बनता है और दो हाइड्रोजन अलग होते हैं, उस स्थान पर इलेक्ट्रोनों का बादलनुमा समूह, जिसे पाई-इलेक्ट्रोन भी कहते हैं, बन जाता है और इस जगह ए.एल.ए. की लड़ मुड़ जाती है।

इलेक्ट्रोन के इस बादल में अपार विद्युत आवेश रहता है जो सूर्य ही नहीं बल्कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड से आने वाले प्रकाश की किरणों के सबसे छोटे घटक फोटोन (जो असीमित, गतिशील, अनंत, जीवन शक्ति से भरपूर व ऊर्जावान हैं और अपना रंग, प्रकृति और आवृत्ति बदल सकते हैं) को आकर्षित करते हैं। ये फोटोन सूर्य से निकल कर, जो ९.३ अरब मील दूर है, असीम ऊर्जा लेकर, जीवन की आस लेकर, प्यार की बहार लेकर, खुशियों की सौगात लेकर आते हैं, अपनी लय, ताल व आवृत्ति बदल कर इलेक्ट्रोन, जो अपने कक्ष में निश्चत आवृत्ति पर सदैव गतिशील रहते हैं, की ओर आकर्षित होते हैं, साथ मिल कर नृत्य करते हैं और तब पूरा कक्ष समान आवृत्ति में दिव्य गुंजन करता है और असीम सौर ऊर्जा का प्रवाह होता है। यही है जीवन का अलसी फलसफा, प्रेम का उत्सव, यही है प्रकृति का संगीत।

पाई-इलेक्ट्रोन कोशिकाओं में भरपूर ऑक्सीजन को भी आकर्षित करते हैं। ए.एल.ए कोशिकाओं की भित्तियों को लचीला बनाते हैं जिससे इन्सुलिन का बड़ा अणु आसानी से कोशिका में प्रवेश कर जाता है। ये पाई-इलेक्ट्रोन ऊर्जा का संग्रहण करते हैं और एक केपेसिटर की तरह काम करते हैं। यही जीवन शक्ति है जो हमारे पूरे शरीर विशेष तौर पर मस्तिष्क, आँखों, मांसपेशियों और स्नायु तंत्र की कोशिकाओं में भरपूर ऊर्जा भरती है। डायबिटीज के रोगी को ऐसे ऊर्जावान इलेक्ट्रोन युक्त अलसी के ३० एम.एल. तेल और ८०-१०० एम.एल. दही या पनीर को विद्युत चालित हाथ से पकड़ने वाली मथनी द्वारा अच्छी तरह फेंट कर फलों और मेवों से सजा कर नाश्ते में लेना चाहिये। इसे एक बार लंच में भी ले सकते हैं। जिस तरह ओमेगा में सारा ब्रह्मांड समाया हुआ है ठीक उसी प्रकार अलसी के तेल में संम्पूर्ण ब्रह्मांड की जीवन शक्ति समायी हुई है। इसीलिए अलसी और दही, पनीर के इस व्यंजन को हम ओमेगा कहते हैं। अलसी का तेल शीतल विधि द्वारा निकाला हुआ फ्रीज में संरक्षित किया हुआ ही काम में लेना चाहिए। इसे गर्म नहीं करना चाहिये और हवा व प्रकाश से बचाना चाहिये ताकि यह खराब न हो। ४२ डिग्री सेल्सियस पर यह खराब हो जाता है।

क्रमशः ....

साभार- नेहा सुमन

जीवन है अनमोल

कथा सरित

एक हीरा व्यापारी था जो हीरे का बहुत बड़ा विशेषज्ञ माना जाता था, किन्तु गंभीर बीमारी के चलते अल्प आयु में ही उसकी मृत्यु हो गयी। अपने पीछे वह अपनी पत्नी और बेटा छोड़ गया। जब बेटा बड़ा हुआ तो उसकी माँ ने कहा -

''बेटा , मरने से पहले तुम्हारे पिताजी ये पत्थर छोड़ गए थे, तुम इसे लेकर बाजार जाओ और इसकी कीमत का पता लगाओ, ध्यान रहे कि तुम्हें केवल कीमत पता करनी है , इसे बेचना नहीं है।''

युवक पत्थर लेकर निकला। सबसे पहले उसे एक सब्जी बेचने वाली महिला मिली। ''अम्मा, तुम इस पत्थर के बदले मुझे क्या दे सकती हो?'' युवक ने पूछा।

''देना ही है तो दो गाजरों के बदले मुझे ये दे दो, तौलने के काम आएगा। सब्जी वाली बोली।

युवक आगे बढ़ गया। इस बार वो एक दुकानदार के पास गया और उससे पत्थर की कीमत जानना चाही । दुकानदार बोला- ''इसके बदले मैं अधिक से अधिक ५०० रुपये दे सकता हूँ। देना हो तो दो नहीं तो आगे बढ़ जाओ।''

युवक इस बार एक सुनार के पास गया, सुनार ने पत्थर के बदले २० हजार देने की बात की। फिर वह हीरे की एक प्रतिष्ठित दुकान पर गया वहाँ उसे पत्थर के बदले १ लाख रुपये का प्रस्ताव मिला। और अंत में युवक शहर के सबसे बड़े हीरा विशेषज्ञ के पास पहुँचा और बोला, ''श्रीमान्! कृपया इस पत्थर की कीमत बताने का कष्ट करें।''

'विशेषज्ञ ने ध्यान से पत्थर का निरीक्षण किया और आश्चर्य से युवक की तरफ देखते हुए बोला , ''यह तो एक अमूल्य हीरा है, करोड़ों रुपये देकर भी ऐसा हीरा मिलना मुश्किल है।''

मित्रों, यदि हम गहराई से सोचें तो ऐसा ही मूल्यवान हमारा मानव जीवन भी है। यह अलग बात है कि हममें से बहुत से लोग इसकी कीमत नहीं जानते और सब्जी बेचने वाली महिला की तरह इसे मामूली समझ तुच्छ कामो में लगा देते हैं।

आइये! हम प्रार्थना करें कि ईश्वर हमें इस मूल्यवान जीवन को समझने की सद्बुद्धि दे और हम हीरे के विशेषज्ञ की तरह इस जीवन का मूल्य आँक सकें।

वल्लभ डोंगरा
भोपाल

सत्यार्थप्रकाश मानक संस्करण की कतिपय विशेषताएँ-

- धर्मार्य सभा के प्रधान आचार्य विशुद्धानन्द जी मिश्र के नेतृत्व में दस विद्वानों की समिति द्वारा तैयार।
- पाठभेद की समस्या का सदैव के लिए निराकरण। मुद्रण भूलों का निराकरण कर परिशिष्ट में आधार की जानकारी भी।
- मानक संस्करण का प्रत्येक पृष्ठ उसी शब्द से प्रारम्भ व समाप्त है जैसा कि मूल सत्यार्थ प्रकाश (१८८४) में है।
- मूल सत्यार्थ प्रकाश (१८८४) सदैव के लिए पाठक के समक्ष उपस्थित रहेगा।
- सुन्दर गेटअप ''५.६X९.०'' पृष्ठ ६५०, वजन ६०० ग्राम, पेपर बैक।

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी।
आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थ प्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

अब मात्र आधी कीमत में ₹ ४०
३५०० रु. सैंकड़ा
शीघ्र मंगवाएँ

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

- न्यास द्वारा ON LINE TEST प्रारम्भ।
- वर्ष में तीन बार दिया जावेगा ५१०० रु. का उपरोक्त पुरस्कार।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से इस ON LINE TEST में भाग लेने का अनुरोध।

बेवसाइट - www.satyarthprakashnyas.org

पत्रिका से सम्बन्धित किसी प्रकार की जानकारी/शिकायत के लिये निम्न चलभाष पर सम्पर्क करें। 09314535379

दूरभाष : ०२६४-२४१७६६४, चलभाष ०९३१४५३५३७९
कृपया न्यास की वेबसाईट : www.satyarthprakashnyas.org पर अवश्य देखें
प्रत्येक माह की 20 तारीख तक भी पत्रिका न मिलने पर कृपया इसी चलभाष पर सम्पर्क करें।

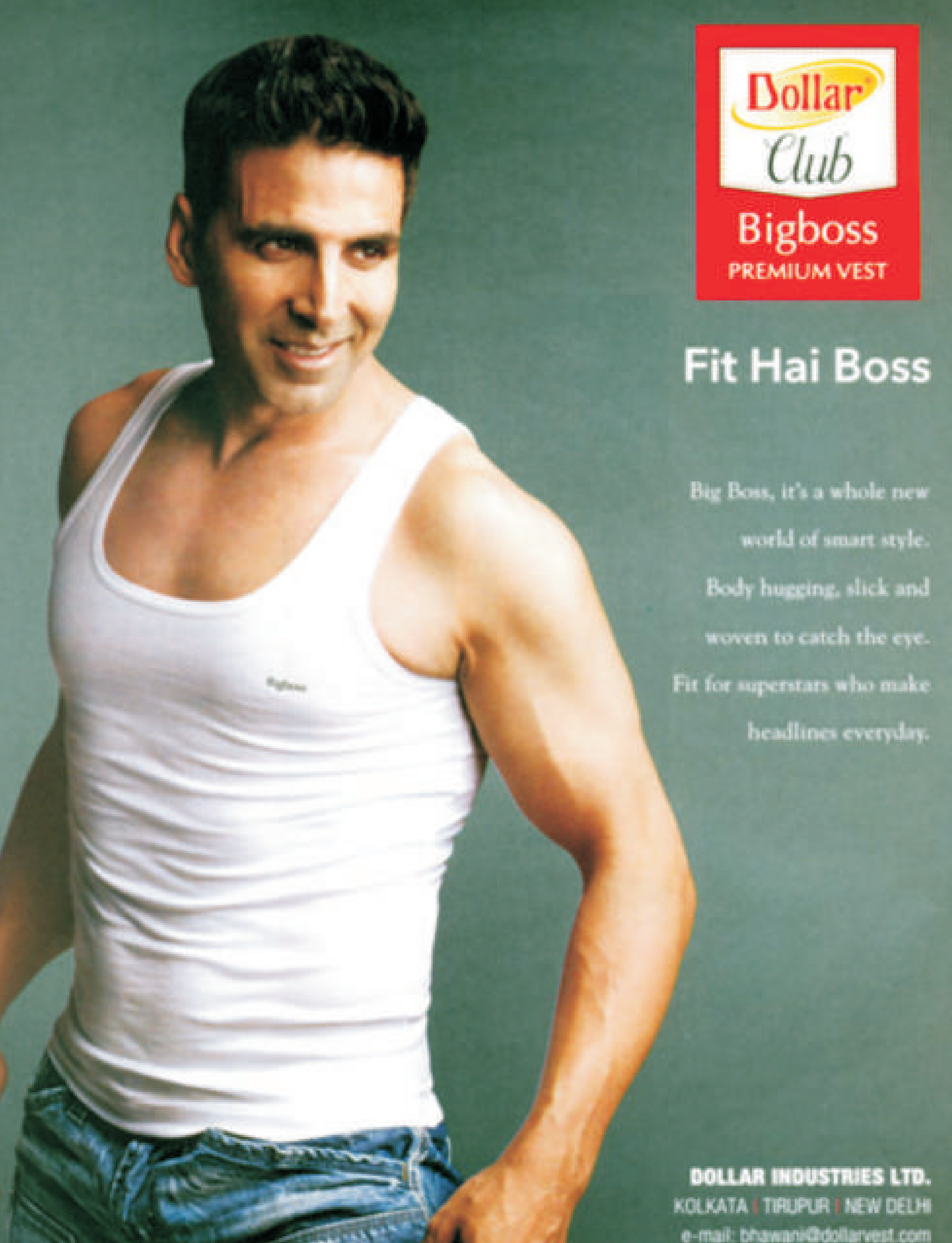
Dollar
Club
Bigboss
PREMIUM VEST
Fit Hai Boss
Big Boss, it's a whole new world of smart style. Body hugging, slick and woven to catch the eye. Fit for superstars who make headlines everyday.
DOLLAR INDUSTRIES LTD.
KOLKATA | TIRUPUR | NEW DELHI
e-mail: bhawani@dollarvest.com

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 March-2014 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2013-2015

रक्षा का अधिकार किनको हो ?

राजा जिनको प्रजा की रक्षा का अधिकार देवे वे धार्मिक, सुपरीक्षित, विद्वान्, कुलीन हों।

सत्यार्थप्रकाश- पृ. १५६

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य